कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक

संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य

सत्यपाल

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798
Qku (dk-) : +91(11) 23381428
QDI : +91(11) 23387887

पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

ई–मेल

kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय–सूची

विधानसभा चुनाव परिणाम

हरियाणा में पूर्ण बहुमत, महाराष्ट्र में सबसे बड़ी पार्टी..... 7
संपादकीय टिप्पणियां..... 9

लेख

अटूट विश्वास का प्रदर्शन
– **बलबीर पुंज**..... 13
क्षेत्रीय दलों के लिए खतरे की घंटी
– **जगदीश उपासने**..... 15
इस जीत का अर्थ क्या है?
– **वेद प्रताप वैदिक**..... 17
मोदी प्रभाव का विस्तार
– **नीरजा चौधरी**..... 18
साहसी फैसले की जीत
– **प्रशांत मिश्र**..... 19
बरकरार है मोदी का करिश्मा
– **प्रदीप सिंह**..... 21

विशेष लेख

एनडीए ने निरन्तर काला धन का पता लगाने की प्रतिबद्धता जताई है
– **अरुण जेटली**..... 22

वैचारिकी

राष्ट्रवाद की सही कल्पना
– **दीनदयाल उपाध्याय**..... 24

अन्य

पं. दीनदयाल उपाध्याय श्रमेव जयते कार्यक्रम में प्रधानमंत्री का संबोधन.... 29
प्रधानमंत्री ने सांसद आदर्श ग्राम योजना की शुरूआत की..... 30

कमल संदेश के सभी सुधी पाठकों को
कार्तिक पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएं!

बोध कथा

महानता की परिभाषा

चीन के महान दार्शनिक कन्फ्यूशियस से कई लोग मिलने आते और उनसे प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा शांत करते। एक बार एक राजा ने उनसे कई प्रश्न पूछे। इसमें एक सवाल था, 'क्या ऐसा कोई व्यक्ति है जो महान हो लेकिन उसे कोई जानता न हो?' कन्फ्यूशियस मुस्करा कर बोले, 'हम बहुत से महान लोगों को नहीं जानते। दुनिया में अनेक ऐसे साधारण लोग हैं जो वास्तव में महान व्यक्तियों से भी महान हैं।'

राजा ने आश्चर्य से कहा, 'ऐसा कैसे हो सकता है?' कन्फ्यूशियस बोले, 'मैं आपको आज एक ऐसे ही व्यक्ति से मिलवाऊंगा।' वे दोनों एक गांव की ओर चल पड़े। कुछ दूर जाने के बाद एक वृद्ध नजर आया। वह पेड़ के नीचे कुछ घड़े लेकर बैठा हुआ था। उन दोनों ने उस बूढ़े व्यक्ति से पानी मांग कर पिया, फिर चने भी खाए। घड़े का ठंडा पानी पीने और चने खाने से दोनों को गर्मी से राहत मिली। जब राजा वृद्ध को चने के दाम देने लगा तो वह बोला, 'राजन, मैं कोई दुकानदार नहीं हूं। मैं तो एक छोटा सा प्रयास कर रहा हूं जो इस उम्र में कर सकता हूं। मेरा बेटा चने का व्यवसाय करता है। घर में अकेले बैठे मन नहीं लगता, इसलिए चने और पानी लेकर यहां बैठा हूं।जब मैं आने-जाने वाले लोगों को ठंडा पानी पिलाता और चने खिलाता हूं तो मुझे अद्‌भुत तृप्ति व शांति मिलती है। इस तरह मेरा समय भी कट जाता है।'

कन्फ्यूशियस ने राजा से कहा, 'देखा राजन, इसकी सोच इसे महान बनाती है। केवल बड़ी-बड़ी बातों से कोई महान नहीं बनता।सचमुच महान वही है जो दूसरों के लिए अपना जीवन लगा दे।' राजा ने वृद्ध को धन्यवाद दिया।

संकलन : लाजपत राय सभरवाल

(नवभारत टाइम्स से साभार)

पाथेय

संस्कृति का विचार करें

राष्ट्रीय दृष्टि से तो हमें अपनी संस्कृति का विचार करना ही होगा, क्योंकि वह हमारी अपनी प्रकृति है। स्वराज्य का स्वसंस्कृति से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है। संस्कृति का विचार न रहा तो स्वराज्य की लड़ाई स्वार्थी, पदलोलुप लोगों की एक राजनीतिक लड़ाई मात्र रह जायेगी। स्वराज्य तभी साकार और सार्थक होगा जब वह अपनी संस्कृति की अभिव्यक्ति का साधन बन सकेगा। इस अभिव्यक्ति में हमारा विकास भी होगा और हमें आनन्द की अनुभूति भी होगी।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

कांग्रेस मुक्त भारत की ओर दो कदम बढ़ी भाजपा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भाजपा की दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय परिषद की बैठक में एक नारा दिया था कि ''हमें कांग्रेस मुक्त भारत'' की ओर आगे बढ़ना है। साथ ही यह भी कहा था कि जिस तरह देश में आजादी की लड़ाई लोगों ने लड़ी, उसी तरह हमें कांग्रेस मुक्त भारत के लिए लड़ाई लड़नी होगी। उन्होंने कहा कि हमें बहुत कड़ी मेहनत करनी होगी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस दिशा में जहां स्वयं अथक परिश्रम करना शुरू किया, वहीं पूरे दल के कार्यकर्ताओं ने मेहनत करके 16 मई को देश में संपन्न आम चुनाव में स्पष्ट बहुमत प्राप्त किया। कांग्रेस, जो सदैव सत्ता में रहती थी, उसे विपक्ष (मान्यता प्राप्त) तक भी नहीं पहुंचने दिया। आज देश के संसद में कांग्रेस प्रतिपक्ष के नेता से दूर है।

भाजपा ने देश में अपनी योजना से कार्य विस्तार करने की ठानी है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने भी राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद अपने पहले उद्‌बोधन में कहा था कि हमारी पार्टी जहां नहीं है, हमें वहां पहुंचना है। उन्होंने कहा था कि हमें अपनी पार्टी के हर राज्य में नम्बर एक पर लाना है। यही कारण है कि उन्होंने उन राज्यों पर विशेष ध्यान दिया, जहां हाल ही में चुनाव होने वाले थे। उन्होंने किया भी यही। महाराष्ट्र और हरियाणा में हुए संपन्न चुनावों की तैयारी उन्होंने तत्‌काल शुरू कर दी थी। इतना ही नहीं अमित भाई शाह ने झारखंड और जम्मू कश्मीर में भी कार्यकर्ताओं से बातचीत कर, वहां भी योजना बना दी।

भाजपा अब उन सभी राज्यों में मजबूत बनना और सत्ता में आना चाहती है, जहां पर वह नहीं है। झारखण्ड और जम्मू कश्मीर के बाद बिहार और उत्तर प्रदेश की दिशा में अपना कदम बढ़ाना है। भाजपा के लिए यह सुनहरा अवसर है कि भाजपा सहित देश को एक ऐसा नेता मिला है, जो आराम करना नहीं जानता। पं. दीनदयाल उपाध्याय के घोष वाक्य को सार्थक करने में स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगे हुए हैं। आश्चर्य तो यही है कि वे अमेरिका से लौटे और दूसरे दिन ''क्लीन इंडिया'' में लग गए और उसके दूसरे दिन से वे पार्टी द्वारा हरियाणा और महाराष्ट्र में आयोजित चुनावी रैलियों में लग गए। प्रधानमंत्री की जगह प्रधानमंत्री का दायित्व और कार्यकर्ताओं के नाते चुनावी दायित्व का भी उन्होंने निर्वाह किया। अपने प्रिय नेता की इस अटूट मेहनत से हम सभी को सबक लेना चाहिए।

देश में दो राजनैतिक घटनाओं ने राजनीति को बदनाम कर दिया था। एक सन् 1977 में जब जनता पार्टी बनी तो उस समय तत्कालीन केन्द्र सरकार ने राज्यों में तत्कालीन सरकारों को भंग कर दिया। ठीक इसी तरह तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी सत्ता में लौटी तो उन्होंने भी सन् 1980 में सभी राज्यों की सरकारें भंग कर दी। लेकिन देश के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने यही तय करके रखा कि जब जिस राज्य में चुनाव होंगे तभी ही चुनाव कराया जाएगा। यही कारण है कि अभी हाल ही में दो राज्यों के चुनाव संपन्न हुए और आगे भी दो राज्यों के चुनाव संपन्न होंगे। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने धीरे-धीरे बिना समय गंवाए इन सभी राज्यों में रात-दिन मेहनत करना शुरु कर दिया।

भाजपा कभी गठबंधन तोड़ने में विश्वास नहीं रखती और न ही तोड़ना चाहती है। भाजपा यह भी स्पष्ट कर चुकी कि हम अपने कार्यकर्ताओं की बलि देकर गठबंधन नहीं चलायेंगे। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह की स्पष्ट मान्यता है कि हम गठबंधन के साथ हैं, पर अपने कार्यकर्ताओं की बलि देकर नहीं। महाराष्ट्र में भाजपा नहीं चाहती थी कि शिवसेना से गठबंधन टूटे, पर शिवसेना ने नाक

में दम कर दिया था। शिवसेना भाजपा को लाचार समझ रही थी। वह सदैव भाजपा को दबाना चाहती थी। गठबंधन एक धर्म है। इसकी मर्यादाओं को सभी को मानना चाहिए। पर शिवसेना ने ऐसा नहीं किया। वह अपने प्रमुख को मुख्यमंत्री के तौर पर प्रस्तुत करने लगे। जो ठीक नहीं था। एक बात यहां शिवसेना को समझना चाहिए कि बाल ठाकरे इसलिए बाल ठाकरे थे कि उनके मन में स्वयं कभी कुछ बनने की तमन्ना नहीं रही। वे प्रमुख थे और जीवन पर्यन्त प्रमुख रहे। अभी जो प्रमुख है, उनके मन में स्वयं मुख्यमंत्री बनने की इच्छा का प्रबल जागरण ही उन्हें स्व. बाल ठाकरे की प्रकृति से अलग कर देता है। बावजूद इसके भाजपा नेता एवं देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने साफ शब्दों में कहा कि ''मैंने तय किया है कि हम शिवसेना के विरूद्ध एक भी शब्द नहीं बोलेंगे। भाजपा के नेता ने जब यह बात तय कर दी, तब भाजपा के अन्य नेता सवाल ही नहीं उठता कि कुछ भी शिवसेना के विरुद्ध बोले। लेकिन शिवसेना के मुखपत्र ''दोपहर का सामना'' ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के पिता का नाम लेकर जिस भाषा का प्रयोग किया वह कहीं से भी न्यायोचित नहीं था। देश के हर हलके में इसका विरोध हुआ। शिवसेना के मुखपत्र की इस टिप्पणी के पीछे किसका हाथ रहा होगा, क्या यह देश नहीं समझता है। ऐसा शिवसेना को नहीं करना चाहिए था। आज स्थिति क्या बनी। क्या भाजपा जो शिवसेना से मांग कर रही थी वह उचित नहीं था? परिणाम ने दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया।

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने जो निर्णय लिया, उससे महाराष्ट्र भाजपा का विस्तार ही हुआ। आज महाराष्ट्र भाजपा पूरी तरह संतुष्ट है और जनता ने साफ तौर पर यह फैसला दे दिया कि महाराष्ट्र में भाजपा ने शिवसेना के साथ सदैव सद्भावना का भाव रखा जबकि शिवसेना का भाव उस तरह का नहीं रहा।

भाजपा ने हरियाणा में जिससे गठबंधन तोड़ा था, उसे आज हरियाणा में सिर्फ दो सीटें मिली है, जबकि भाजपा से पैंतालिस सीटों की मांग हजकां द्वारा की जा रही थी। भाजपा ने सदैव अपना मन रखा है। लेकिन सामने वालों ने गठबंधन को भाजपा की मजबूरी समझी।

राजनीति में जो दल अपनी राजनैतिक शक्ति का जनता के बीच आकलन नहीं करता, वह स्वयं भी अपने साथ न्याय नहीं करता। अत: हर राजनैतिक दलों को सदैव अपने राजनैतिक शक्तियों का जन-आकलन करते रहना चाहिए।

भाजपा के पास जहां एक उत्कृष्ट नेता है, वहीं शानदार केन्द्रीय नेतृत्व है और लाखों समर्पित कार्यकर्ता हैं। इन सभी का जब जोड़ बनता है तो परिणाम अनुकूल आता है। आज भाजपा को अपने दल का जन-विस्तार सदैव करते रहना चाहिए। भाजपा का यह जन-विस्तार ही आगे चलकर उसकी शक्ति बढ़ायेगी।

भाजपा का उन राजनैतिक पंडितों और मीडिया के लोगों से आग्रह है कि वे राजनीति और राजनीतिज्ञों पर अवश्य टिप्पणी करें, पर वे अपनी दुश्मनी उनसे नहीं निकालें। जनता जागरूक है। आम जनता ही है, जो सब जानती है। ■

''विराट पुरुष नानाजी'' ग्रंथावली का विमोचन

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विराट पुरूष नानाजी देशमुख नामक ग्रंथावली का विमोचन किया। यह ग्रंथ दीनदयाल अनुसंधान संस्थान द्वारा छह अंकों में संकलित किया गया है, जो नानजी देशमुख की रचनाओं का संकलन है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र। मोदी ने नानाजी देशमुख की शक्ति, अभियान और राष्ट्र निर्माण एवं सामाजिक कल्याण के प्रति उनकी वचनबद्धता की सराहना की। उन्होंने कहा कि उनके प्रयासों की बदौलत ही शिशु मंदिर, जिसकी शुरूआत गोरखपुर में की गई थी, देशभर में शिक्षा का एक विख्यात संस्थान बना। उन्होंने राजनीतिक सहमति विकसित करने की नानाजी की क्षमता की भी सराहना की। प्रधानमंत्री ने कहा कि श्री देशमुख ने 60 वर्ष की आयु में राजनीति से संन्यास लेते हुए अपना समूचा जीवन ग्रामीण विकास के प्रति समर्पित कर दिया था। श्री मोदी ने यह भी याद दिलाया कि देशमुख से प्रेरित होकर अनेक युवाओं ने सामाजिक उत्थान के प्रति अपने को समर्पित कर दिया था। श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि नानाजी ने अनेक प्रसिद्ध उद्योगपतियों को भी समाज के लिए काम करने के लिए प्रेरित किया था। उन्होंने कहा कि नानाजी का विचार था कि विज्ञान सार्वभौमिक हो सकता है लेकिन प्रौद्योगिकी अनिवार्य रूप से स्थानीय होनी चाहिए। प्रधानमंत्री ने कहा कि 'विराट पुरूष नानाजी' नामक ग्रंथ भारत की भावी पीढ़ियों को राष्ट्र निर्माण में योगदान के लिए प्रेरित करेगा। ■

भाजपा की ऐतिहासिक विजय

हरियाणा में पूर्ण बहुमत, महाराष्ट्र में सबसे बड़ी पार्टी

भाजपा का विजय रथ आगे बढ़ रहा है। इसी साल हुए लोकसभा चुनाव में ऐतिहासिक विजय के पश्चात् अब महाराष्ट्र और हरियाणा विधानसभा चुनावों में भाजपा ने शानदार प्रदर्शन किया। वहीं, कांग्रेस की दुर्दशा लगातार जारी है और दशक से ज्यादा राज करने के बाद दोनों राज्यों में वह मुख्य विपक्षी दल बनने लायक भी नहीं रह गई है।

15 अक्टूबर को महाराष्ट्र एवं हरियाणा विधानसभा के लिए संपन्न हुए चुनाव और 19 अक्टूबर को इसके आए परिणामों में जहां हरियाणा में भाजपा ने स्पष्ट बहुमत हासिल कर लिया, वहीं महाराष्ट्र में वह सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी। 288 सदस्यीय विधानसभा के घोषित परिणामों में से 122 सीटों पर भाजपा ने शानदार विजय प्राप्त की। शिवसेना दूसरे नंबर पर है। उसे 63 सीटें मिली हैं। 42 कांग्रेस के पक्ष में गये हैं तथा राकांपा को 41 सीटें मिली हैं। मनसे की हालत खराब रही, उसे सिर्फ एक सीट मिली। अन्य के खाते में 18 सीटें गयीं। शिवसेना के साथ गठबंधन टूटने के बाद अपने दम पर चुनाव में उतरी भाजपा ने राज्य में ऐतिहासिक प्रदर्शन किया।

वहीं, हरियाणा की राजनीति में शानदार आगाज करते हुए भाजपा ने विधानसभा चुनाव में पहली बार अपने दम पर बहुमत हासिल कर लिया और कांग्रेस और इंडियन नेशनल लोकदल (इनेलो) को जबर्दस्त हार का स्वाद चखाया। इस बार लोकसभा चुनाव में हरियाणा में सात सीटें हासिल करने वाली भाजपा ने अब विधानसभा चुनाव में 47 सीटें हासिल की जो कि 90 सदस्यीय विधानसभा में बहुमत के लिए जरूरी संख्या से एक सीट अधिक है। बाकी बची 43 सीटों में से कांग्रेस ने 15, इनेलो 19, हरियाणा जनहित कांग्रेस (बीएल) दो, शिरोमणि अकाली दल और बसपा एक-एक और निर्दलीय पांच सीटों पर विजयी रहे। चुनाव में एक भी सीट नहीं जीत पाने वाली राजनीतिक पार्टियों में भाकपा और माकपा शामिल हैं। 1966 में हरियाणा के गठन के बाद से यह भाजपा का अब तक का सबसे अच्छा प्रदर्शन है।

पार्टी ने 1987 में सबसे अधिक 16 सीटें जीती थी जबकि 20 सीटों पर चुनाव लड़ा था। पार्टी 2009 के विधानसभा चुनाव में मात्र चार सीटों पर जीत दर्ज कर पाई थी। ■

भाजपा मुख्यालय में मनी दिवाली

हरियाणा विधानसभा चुनाव जीतने और महाराष्ट्र में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरने का जश्न भाजपा के राष्ट्रीय मुख्यालय में जमकर मना। पार्टी मुख्यालय पर ऐसा लग रहा था कि दिवाली आज ही हो। मौके पर जीत के जश्न में जमकर मिठाइयां बांटी गईं, वहीं खूब आतिशबाजी भी हुई। साथ ही पार्टी कार्यकर्ताओं ने गुलाबों की पंखुड़ियों से एक दूसरे का स्वागत किया गया।

19 अक्तूबर की सुबह हरियाणा और महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव का परिणाम का रुझान जैसे-जैसे भाजपा के पक्ष में आता गया वैसे-वैसे भाजपा कार्यकर्ता अशोक रोड स्थित भाजपा मुख्यालय पर जमने लगे। ढोल-नगाड़ों और बैंड-बाजे के साथ कई कार्यकर्ता 11 बजे तक पार्टी दफ्तर पहुंच कर जीत के जश्न में मशगूल हो गए थे। यहां ढोल नगाड़ों के साथ हरियाणा के लोक गीत-संगीत पर ही आधारित गीत भी गाए जा रहे थे। इस बीच कार्यकर्ताओं ने जमकर नारेबाजी की।

मोदी के काम पर जनता की मुहर : अमित शाह

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने कहा कि महाराष्ट्र और हरियाणा में भाजपा की सरकार बनने जा रही है।

उन्होंने कहा कि इन दोनों राज्यों में अब तक के चुनावी इतिहास में भाजपा की ये सबसे बड़ी जीत है। हरियाणा और महाराष्ट्र विधान सभा चुनाव नतीजों के बाद 19 अक्टूबर को दिल्ली में पत्रकारों से बात करते हुए अमित शाह ने ये बातें कहीं।

श्री शाह ने कहा कि महाराष्ट्र और हरियाणा में कांग्रेस तीसरे नंबर पर खिसक गई है और भाजपा कांग्रेसमुक्त भारत के लक्ष्य की तरफ बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि यह हरियाणा और महाराष्ट्र की जनता की जीत है। जनता ने निर्विवाद तौर पर नरेंद्र मोदी को अपना नेता माना।

भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि जिन आकांक्षाओं से देश की जनता ने भाजपा को केंद्र में अपना समर्थन दिया था, उसके कामकाज पर जनता ने एकतरह से मुहर लगाई है। चुनावों से पहले कुछ ऐसे हालात बने कि हमें गठबंधन तोड़कर अकेले चुनाव लड़ना पड़ा। महाराष्ट्र में तो 74 सीटें ऐसी थी जहां भाजपा पहली बार लड़ी और जीती।

हरियाणा में पिछले चुनावों में भाजपा को सिर्फ चार सीटों पर जीत मिली थी, इस बार 48 से अधिक सीटें जीतना बहुत अहम है। महाराष्ट्र में पिछले चुनाव में भाजपा को 14 प्रतिशत वोट मिले थे, इस बार यह प्रतिशत बढ़कर 27 हो गया। ■

जीत पर भाजपा को गर्व है : नरेंद्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने महाराष्ट्र और हरियाणा विधानसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी की जीत को ऐतिहासिक बताते हुए दोनों राज्यों की जनता को बधाई दी। श्री मोदी ने 19 अक्टूबर को चुनाव नतीजे आने के बाद ट्वीट करते हुए कहा कि मैं महाराष्ट्र की जनता के प्रति कृतज्ञ हूं। हम राज्य की प्रगति के लिए कटिबद्ध हैं। साथ ही महाराष्ट्र को ऐसा राज्य बनाएंगे कि दुनिया उस पर गर्व कर सके। उन्होंने हरियाणा की जनता को बधाई देते हुए कहा कि इस जीत से उन्हें राज्य की जनता के सपनों को पूरा करने का मौका मिलेगा और हम उसे विकास की नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे। प्रधानमंत्री ने इन दोनों राज्यों में पार्टी की जीत पर अपार प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह भाजपा के लिए गर्व की बात है और वह इस अथक प्रयास के लिए कार्यकर्ताओं को बधाई देते हैं। ■

भाजपा संसदीय दल में पारित प्रस्ताव

भारतीय जनता पार्टी की संसदीय बोर्ड की बैठक 19 अक्टूबर को पार्टी मुख्यालय पर सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने की । प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एव संसदीय बोर्ड के अन्य सदस्य बैठक में उपस्थित रहे। बैठक में महाराष्ट्र और हरियाणा विधानसभा चुनाव परिणामों का विश्लेशण किया गया। भाजपा जनादेश को विनम्रता से स्वीकार करती है। भाजपा पर, दोनों राज्यों के मतदाताओं ने जो विश्वास एवं भरोसा व्यक्त किया है, उसके लिए पार्टी आभार व्यक्त करती है। संसदीय बोर्ड ने सभी पार्टी कार्यकर्ताओं के अथक प्रयास एवं कड़ी मेहनत के लिए भी धन्यवाद व्यक्त किया जिसके कारण विशाल विजय मिली। पार्टी ने हरियाणा एवं महाराष्ट्र के चुनाव परिणामों पर पूर्ण संतुष्टि व्यक्त की। यह परिणाम भारतीय जनता पार्टी एवं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की लोकप्रियता की पुनर्पुष्टि है, जिन्होने व्यापक प्रचार किया एवं दोनो राज्यों में इसका नेतृत्व किया। यह खुशी की बात है कि भारतीय जनता पार्टी जहाँ दोनों राज्यों में कुछ विधानसभाओं पर चुनाव लड़ती थी उसने हरियाणा की सभी एवं महाराष्ट्र की 256 विधानसभाओं पर चुनाव लड़ा। शेष विधानसभाओं पर हमारे गठबंधन साथियों ने चुनाव लड़ा। वोटो की प्राप्ति एवं विजयी सीटों, दोनों ही स्थितियों में, दोनों ही राज्यों में हमने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है। यह चुनाव इंगित करता है, कि दोनों राज्यों के लोग एक स्थिर एवं विकासोन्मुखी राष्ट्रवादी सरकार चाहते है। यह ध्यातव्य है कि कांग्रेस पार्टी जो कि दोनों राज्यों में शासन कर रही थी, दोनों ही राज्यों में किसी तरह तीसरा स्थान प्राप्त किया है। यह उसके सिकुड़ते जनाधार का परिचायक है। यह चुनाव परिणाम निर्देशित करते है, कि लोगों ने विगत चार माह के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की नेत्तृव वाली एनडीए सरकार की सुशासन एवं विभिन्न जन कल्याण कारी योजनाओं के प्रति अपना विश्वास व्यक्त किया है। वे भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता सिद्ध हुए है एवं उन्होंने असंख्य लोगों का दिल जीता है। भाजपा दोनों राज्यों में सरकार बनाएगी। अन्ततः चुनाव परिणाम पार्टी की भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण स्थिति को दर्शाता है। जो चुनावी प्रवृति लोकसभा 2014 के चुनाव में दिखी थी, जोकि पार्टी एवं इसके नेता श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रति अपार श्रद्धा एवं विश्वास को दर्शाती है, वह देश मे लगातार बढ़ रही है। पार्टी एक बार पुनः दोनों राज्यों के मतदाताओं का धन्यवाद देती है, और दोनों राज्यों की जनता को आश्वस्त करती है, कि जिस विश्वास के साथ उन्होंने जनादेश दिया है, भाजपा उस पर खरा उतरेंगी। ■

संपादकीय टिप्पणियां

महाराष्ट्र एवं हरियाणा विधानसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को मिली ऐतिहासिक जीत को दिल्ली से प्रकाशित हिंदी के राष्ट्रीय समाचार-पत्रों ने ऐतिहासिक बताते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के काम व भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह के प्रबंधन को श्रेय दिया है। हम यहां संपादकीय टिप्पणियां के प्रमुख अंश प्रकाशित कर रहे हैं:

अमर उजाला

महाराष्ट्र और हरियाणा के विधानसभा चुनावों में भाजपा का सबसे बड़ी पार्टी के रूप में सामने आना बताता है कि लोकसभा चुनाव के करीब पांच महीने बाद भी मतदाताओं के बीच नरेंद्र मोदी का प्रभाव कमोबेश बरकरार है। हरियाणा में शानदार जीत जरूर भाजपा की विराट उपलब्धि है। जिस राज्य में भाजपा ने सहयोगियों के बगैर चुनाव नहीं लड़ा हो, और साथ लड़ते हुए भी जिसका प्रदर्शन बहुत उत्साहनजक नहीं रहा हो, वहां अकेले दम पर सभी सीटों पर चुनाव लड़कर सरकार बनाने के लिए पर्याप्त सीटें जीतकर आना कोई छोटी-मोटी उपलब्धि नहीं है। बेशक हरियाणा में कांग्रेस की पराजय के पीछे उसकी खराब छवि और सत्ता-विरोधी लहर जिम्मेदार है, लेकिन मोदी और भाजपा के पक्ष में बने माहौल का प्रमाण यही है कि मुख्यमंत्री का चेहरा सामने न रखकर भी पार्टी ने यहां शानदार जीत हासिल कर ली है। इनेलो प्रमुख का जमानत पर बाहर आकर चुनावी रैली करना भी काम नहीं आया। हरियाणा का चुनावी नतीजा उन वंशवादी स्थानीय पार्टियों के लिए चेतावनी है, जो अपने भ्रष्टाचरण पर पर्दा डालने के लिए जातिवाद और क्षेत्रवाद का सहारा लेने से भी गुरेज नहीं करतीं। हरियाणा के मतदाताओं ने इस तरह की राजनीति को नकार कर बदलाव के पक्ष में वोट दिया है। लिहाजा उनकी उम्मीदों पर खरा उतरने के लिए भाजपा को भ्रष्टाचार मुक्त पारदर्शी प्रशासन पर जोर देना होगा।

नवभारत टाइम्स

हरियाणा और महाराष्ट्र में चुनाव परिणामों ने बड़ा परिवर्तन कर दिखाया है। इसे मोदी मैजिक कहा सकता है, लेकिन यह तय है कि दोनों राज्यों में मतदाताओं ने बदलाव को तरजीह दी है। महाराष्ट्र में जहां 63.13 फीसदी मतदान हुआ, वहीं हरियाणा में 1967 के बाद अब तक का सर्वाधिक मतदान प्रतिशत (76.54) रहा। यह परिवर्तन स्वागत योग्य है क्योंकि इससे लंबे समय से चले आ रहे समीकरणों को झटका लगा है। दरअसल, इनके चलते जिस किस्म के निहित स्वार्थ आकार ले लेते हैं, उनमें फिर किसी नए विजन की संभावनाएं ही खत्म हो जाती हैं। बदलाव हमेशा अच्छा इसलिए होता है कि उससे उम्मीदें बंधती हैं।

राष्ट्रीय सहारा

महाराष्ट्र और हरियाणा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लहर का जादू सिर चढ़कर बोला। हरियाणा में मोदी नाम की सुनामी ने सत्तारूढ़ कांग्रेस सहित अन्य स्थापित क्षेत्रीय दलों को धूल चटाकर स्पष्ट बहुमत हासिल किया है तो महाराष्ट्र में पंचकोणीय संघर्ष में सभी विरोधी दलों को पीछे छोड़कर भाजपा सबसे बड़े दल के रूप में उभरी है। इन दोनों राज्यों में उसकी सरकार बन रही है। हरियाणा के राजनीतिक इतिहास में यह पहला अवसर है जब भाजपा की बहुमत की सरकार बनने जा रही है। उसने दोनों राज्यों को कांग्रेस से छीन लिया है। चुनाव परिणामों ने मोदी और अमित शाह के गठबंधन की राजनीति से हाथ झाड़ने के फैसले पर मोहर लगा दी है और इस फैसले से असहमत पार्टी के अंदर और बाहर के लोगों की भी बोलती बंद कर दी है। साथ ही मोदी की लोकप्रियता का ग्राफ अपने चरम पर पहुंच गया है। जनादेश ने एक बार फिर स्पष्ट कर दिया है कि जनता का मोदी में अटूट भरोसा है। दोनों राज्यों के परिणाम मोदी और उनकी सरकार के चार माह के कार्य और भावी योजनाओं के प्रति जनता के स्पष्ट समर्थन का प्रमाण हैं। वंशवाद को खारिज करने के मोदी के आह्वान को भी जनता का भारी समर्थन मिला है। चुनाव परिणामों ने पार्टी के अंदर अध्यक्ष अमित शाह के कद को और बढ़ा दिया है। उनकी छवि भी कुशल

रणनीतिक नेता के रूप में उभरी है। परिणाम ने भाजपाइयों के हौसले और बढ़ा दिए हैं, जिसका सकारात्मक असर जम्मू-कश्मीर, झारखंड और पश्चिम बंगाल के चुनावों में भी देखने को मिलेगा। महाराष्ट्र में भाजपा ने शिवसेना से अलग चुनाव लड़कर और जीत हासिल कर दिखा दिया है कि वह सबसे बड़ी पार्टी है। दिलचस्प तो यह है कि शिवसेना गठबंधन के तहत उसे चुनाव लड़ने के लिए जितनी सीटें दे रही थी, उसने अलग लड़कर लगभग उतनी सीटें जीत ली हैं।

दैनिक भास्कर

महाराष्ट्र और हरियाणा के चुनाव परिणामों ने नरेंद्र मोदी के हाथों को और ताकत दी है। इन नतीजों ने फिर तस्दीक की है कि मोदी अपनी रणनीति और नेतृत्व कौशल से अपने नाम पर राजनीतिक पूंजी जुटाने में सक्षम हैं। इसी पूंजी ने देश खासतौर पर भारतीय जनता पार्टी के भीतर उनकी बेजोड़ हैसियत बना दी है। कहा जा सकता है कि दोनों राज्यों में भाजपा की सफलता ने प्रधानमंत्री की राजनीतिक हैसियत में ऐसी बढ़ोतरी की है, जिससे आने वाले दिनों में उनके लिए कठिन फैसले लेना ज्यादा आसान हो जाएगा। अत: इससे उम्मीद बंधती है कि आर्थिक सुधारों की प्रक्रिया अब रफ्तार पकड़ेगी। दरअसल, चुनाव परिणाम आने से एक दिन पहले ही एनडीए सरकार ने डीजल के मूल्य को नियंत्रण मुक्त करने, देश में निकलने वाली प्राकृतिक गैस की कीमत बढ़ाने और रसोई गैस सिलिंडरों पर सब्सिडी को सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में हस्तांतरित करने की योजना आगे बढ़ाने के साहसी फैसले लिए। इसके पहले रेल किराया बढ़ाने, चीनी मिलों को पैकेज, नरेगा का दायरा सीमित करने, परियोजनाओं की पर्यावरण मंजूरी संबंधी शर्तों को आसान बनाने आदि जैसे निर्णय लिए गए थे। महाराष्ट्र और हरियाणा के चुनावों में मोदी अपनी सरकार के ऐसे ही रिकॉर्ड के साथ वोट मांगने गए। नतीजों से साफ है कि इन फैसलों का औचित्य मतदाताओं को समझाने में प्रधानमंत्री सफल रहे। उन्होंने विकास के अपने मॉडल पर आम जन से सहमति प्राप्त कर ली है। इस मॉडल का निहितार्थ है कि निवेश बढ़ेगा तो आर्थिक वृद्धि दर तेज होगी और फिर उसके लाभ सभी तबकों को मिलेंगे। लोकसभा चुनाव में भाजपा को तत्कालीन यूपीए सरकार से लोगों की नाराजगी का लाभ भी मिला था। हालांकि, ताजा चुनाव परिणामों को एनडीए सरकार के लिए अधिक स्पष्ट सकारात्मक समर्थन माना जा सकता है। इसे एक बार फिर से आर्थिक वृद्धि दर केंद्रित विकास नीति पर जन साधारण के मुहर के रूप में देखा जाएगा। चूंकि मोदी ने ऐसे विकास की ऊंची उम्मीद जगाई और अपने अब तक के शासनकाल में उसे बरकरार रखने में सफल हैं, अत: उनकी पार्टी विजेता होकर उभरी है। अब वक्त उन उम्मीदों को पूरा करने का है। केंद्र सरकार के पास ऐसा नहीं करने का अब कोई बहाना नहीं है।

राष्ट्रीय सहारा

महाराष्ट्र और हरियाणा ने दिखा दिया है कि लोकसभा चुनावों में दिखा नरेंद्र मोदी का जादू अभी तक खत्म हुआ है। हरियाणा में अब तक महज अपनी मौजूदगी से ही संतुष्ट रहने वाली भाजपा को 'मोदी जादू' ने एकबारगी उछाल कर सत्ता सिंहासन तक पहुंचा दिया है, तो महाराष्ट्र में तमाम दिग्गजों को पछाड़ कर उसने ऐसी बढ़त बना ली है जिसका रास्ता अंतत: सत्ता की मंजिल तक ही पहुंचता है। इन दोनों राज्यों में इस बार रिकॉर्ड मतदान हुआ था और नतीजे बता रहे हैं कि लोग अब केवल बदलाव के इच्छुक नहीं रह गए हैं बल्कि तरक्की की धुन नए मतदाताओं में अपने मताधिकार के हथियार का इस्तेमाल करने की प्रेरणा जगा रही है। लोकतंत्र के लिए इससे बढ़िया खबर क्या हो सकती है! मोदी जरूर खुश होंगे कि देश को 'कांग्रेस मुक्त' बनाने की ओर उन्होंने दो कदम और बढ़ा लिए हैं। हरियाणा में भाजपा की पहली बार सरकार बनने जा रही है, हालांकि महाराष्ट्र में सत्ता स्वाद चखने का उसका यह दूसरा मौका होगा। लेकिन मोदी का यह जादू शून्य में नहीं चला है क्योंकि कांग्रेस शासित दोनों राज्यों में भ्रष्टाचार और परिवारवाद ने ऐसा कोहराम मचा रखा था कि लोग मुक्ति के लिए छटपटा रहे थे। शिक्षक भर्ती घोटाले में बाप-बेटा दोनों साथ जेल में हैं, बावजूद ओम प्रकाश चौटाला सपना पाले हुए थे कि वह तिहाड़ के अंदर से ही हरियाणा की बागडोर संभालेंगे। उन्हें हरियाणा की जाट प्रभुत्व वाली राजनीति पर पूरा भरोसा था, जो इस बार अगर टूटा नहीं तो चरमरा जरूर गया होगा। एक दशक से लगातार सत्ता की नकेल थामने वाले मुख्यमंत्री भूपिंदर सिंह हुड्डा का आत्मविास इतना छलकने लगा था कि वह खुद कानून बन गए थे और रॉबर्ट वाड्रा जैसे असरदार लोगों को हरियाणा के किसानों की कीमत पर अरबपति बना रहे थे। इस चुनाव ने हुड्डा और कांग्रेस, दोनों को एक साथ हाशिए पर खड़ा कर दिया है। चुनाव नतीजे एक बार फिर क्षेत्रीय दलों के अस्तित्व पर सवाल खड़ा करने वाले हैं- हरियाणा में चौटाला का इनेलो और महाराष्ट्र में शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी को

खासी चोट पहुंची है। शिवसेना ने बेशक सीटों की संख्या बढ़ाई है लेकिन भाजपा के प्रदर्शन ने उसे उसकी हैसियत भी दिखा दी है- सत्ता से लंबे अंतराल से बाहर चल रही शिवसेना नखरे चाहे जितने दिखा ले, अपना अस्तित्व बचाने के लिए उसे भाजपा के साथ आना ही होगा। भाजपा को आननफानन में बिना शर्त बाहर से समर्थन देने के पीछे एनसीपी की मजबूरी भी समझी जा सकती है- राज्य में हुए तमाम बड़े घोटालों में उसके नेताओं की संलिप्तता की चर्चा हरेक जुबान पर जो है। भाजपा की यह जीत ममता बनर्जी, उमर अब्दुल्ला और नवीन पटनायक जैसे तमाम बड़े क्षेत्रीय नेताओं की नींद भी उड़ा कर रख देने वाली है। भाजपा के लिए अब नरेंद्र मोदी और अमित शाह की जुगलबंदी चल निकली है जिसे रोकना हाल फिलहाल किसी के वश की बात नहीं लगती।

दैनिक जागरण

हरियाणा और महाराष्ट्र के चुनाव नतीजों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता पर नए सिरे से मुहर लगाने के साथ ही यह भी स्पष्ट किया कि कांग्रेस के साथ-साथ क्षेत्रीय दलों की राजनीतिक जमीन खिसकने का सिलसिला कायम है। इन दोनों राज्यों में नरेंद्र मोदी ने प्रचार की कमान एक तरह से अपने हाथ में लेकर खुद की प्रतिष्ठा दांव पर लगा दी थी। मोदी के इस दांव से विरोधी पस्त तो हुए ही, उपचुनाव नतीजों के आधार पर खड़ा किया गया वह किला भी रेत के महल की तरह ढह गया कि उनका जादू तो उतार पर है। हरियाणा और महाराष्ट्र में भाजपा की अप्रत्याशित सफलता के लिए कई कारण गिनाए जा सकते हैं, लेकिन सबसे अधिक श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा के नए अध्यक्ष अमित शाह को ही देना होगा। इन दोनों राज्यों में सत्ता की बागडोर भाजपा के हाथ आना सुनिश्चित होने से नरेंद्र मोदी का राजनीतिक कद और अधिक बढ़ा हुआ नजर आने लगा है। इस बढ़े हुए कद का लाभ उन्हें राष्ट्रीय और साथ ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी मिलेगा। नि:संदेह महाराष्ट्र में भाजपा अपने बलबूते सरकार बनाने में सफल नहीं हो सकी, लेकिन यह सहज-सामान्य नहीं कि अकेले लड़ने के बावजूद उसे पिछली बार के मुकाबले दोगुनी से अधिक सीटें मिलीं। यदि भाजपा ने थोड़ा और पहले अकेले दम चुनाव मैदान में उतरने का फैसला किया होता तो शायद वह अपने बलबूते सरकार बनाने की स्थिति में होती, क्योंकि लोकसभा चुनाव नतीजे यही झलक पेश कर रहे थे कि भाजपा विधानसभा चुनाव में अपने दम पर परचम फहरा सकती है।

महाराष्ट्र में बहुमत से दूर रहने के बावजूद भाजपा के दोनों हाथों में लड्डू से हैं, क्योंकि राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी भी उसके साथ आने को तैयार है और शिवसेना को भी यह समझ आ गया है कि उसने अपनी जिद से अपना नुकसान कर लिया। यदि शिवसेना को गठबंधन राजनीति करनी है तो उसे तनिक राजनीतिक शिष्टता भी सीखनी होगी। महाराष्ट्र में भाजपा की सत्ता का सहयोगी जो भी बने, मुख्यमंत्री पद उसके पास रहने से मोदी सरकार को देश की वित्तीय राजधानी को अपने हिसाब से चलाने में जो मदद मिलेगी उसका लाभ महाराष्ट्र के साथ ही राष्ट्र को भी मिलेगा। भाजपा के लिए महाराष्ट्र के मुकाबले हरियाणा के चुनाव नतीजे इसलिए ज्यादा सुखद हैं, क्योंकि यहां वह अपने बल पर सरकार बनाने जा रही है। पिछली बार की चार सीटों के मुकाबले बहुमत लायक सीटें हासिल करना इसलिए चुनावी चमत्कार है, क्योंकि हरियाणा को कभी भी भाजपा के गढ़ के रूप में नहीं देखा गया। महाराष्ट्र और हरियाणा में फतह हासिल करने के बाद भाजपा की अगली चुनौती इन दोनों राज्यों के लिए सक्षम नेतृत्व का चयन करने की है। प्रधानमंत्री के रुख-रवैये को देखते हुए इस बारे में आश्वस्त हुआ जा सकता है कि इस चयन की एकमात्र कसौटी प्रशासनिक क्षमता और दक्षता ही होगी। महाराष्ट्र और हरियाणा के विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद उपचुनावों से बेवजह उत्साहित विपक्षी दलों को धरातल पर आने के साथ ही अपनी रीति-नीति पर नए सिरे से विचार करना चाहिए। वैसे तो राजनीति में हार-जीत लगी रहती है, लेकिन लोकसभा चुनावों के बाद इन दो राज्यों के चुनाव यह भी बता रहे हैं कि भारतीय राजनीति में कुछ बुनियादी परिवर्तन हो रहे हैं। ये परिवर्तन इसलिए शुभ नजर आते हैं, क्योंकि अनैतिकता का पर्याय बनी गठबंधन राजनीति हाशिये पर जाती दिख रही है।

जनसत्ता

तमाम सर्वेक्षणों और एग्जिट पोल ने जैसे अनुमान जाहिर किए थे, महाराष्ट्र और हरियाणा के विधानसभा चुनावों के नतीजे वैसे ही आए हैं। दोनों प्रदेशों में बाजी भारतीय जनता पार्टी के हाथ लगी है।

लोकसभा चुनाव में भी महाराष्ट्र और हरियाणा में भाजपा को अपूर्व सफलता मिली थी। पर और पहले के राजनीतिक इतिहास के बरक्स देखें तो ये नतीजे किसी हद तक अप्रत्याशित भी लगेंगे। इन दोनों राज्यों के कोने-कोने में भाजपा का मजबूत सांगठनिक आधार कभी नहीं रहा, न दोनों

विधानसभाओं में वह कभी पहले नंबर की विपक्षी पार्टी रही, उसे कभी सत्ता में उगने का मौका मिला भी तो कनिष्ठ साझेदार के तौर पर। लेकिन इस बार उसने हरियाणा में अपने दम पर बहुमत पा लिया है, और महाराष्ट्र में भी सबसे बड़ी पार्टी के नाते उसी की सरकार बनना तय है। भाजपा की यह सफलता उसके नए विस्तार को दर्शाती है। यह विस्तार भौगोलिक ही नहीं, सामाजिक भी है।

दैनिक ट्रिब्यून

विधानसभा चुनावों में भी मोदी का जादू चल गया। सोलहवीं लोकसभा के चुनावों में, तीस साल बाद किसी एक दल के रूप में भाजपा को स्पष्ट बहुमत का श्रेय स्वाभाविक ही उसके प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी को मिला, लेकिन उसके बाद हुए ज्यादातर उप चुनावों में पार्टी का प्रदर्शन निराशाजनक ही रहा। इसीलिए हरियाणा और महाराष्ट्र के विधानसभा चुनावों पर राजनीतिक प्रेक्षकों की नजरें खासतौर पर लगी हुई थीं। फिर भाजपा ने हरियाणा में हरियाणा जनहित कांग्रेस और महाराष्ट्र में शिवसेना से गठबंधन तोड़ कर इन चुनावों को और भी रोचक ही नहीं, बल्कि निर्णायक भी बना दिया था। मतगणना के परिणाम बताते हैं कि भाजपा ने इस चुनौती को स्वीकार किया, लेकिन इस तथ्य को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि हरियाणा और महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में मिली जीत का श्रेय भी सबसे अधिक प्रधानमंत्री मोदी को ही जाता है। सही मायने में वह ही भाजपा के स्टार प्रचारक थे। एक प्रधानमंत्री द्वारा राज्य विधानसभा चुनावों में इतना सघन प्रचार करने पर कटाक्ष भी किये गये, लेकिन मोदी अपनी पार्टी की नैया पार लगाने में सफल रहे। जिस हरियाणा में निवर्तमान विधानसभा में भाजपा की महज चार सीटें थीं, वहां उसे अकेले दम सरकार बनाने लायक बहुमत मिल गया है। निश्चय ही इसे ऐतिहासिक सफलता के अलावा कुछ और नहीं कहा जा सकता। महाराष्ट्र में भाजपा भले ही बहुमत के आंकड़े से पहले ही ठहर गयी है, लेकिन दशकों से शिवसेना की जूनियर पार्टनर रही पार्टी के लिए बड़े फासले के साथ सबसे बड़े दल के रूप में उभरना भी कम बड़ी उपलब्धि नहीं है। महाराष्ट्र में भाजपा-शिवसेना के बीच तकरार मुख्यमंत्री पद को ले कर शुरू हुई थी, जो अंततः अलगाव तक पहुंच गयी, लेकिन अब मतदाताओं ने अपना फैसला सुना दिया है। डेढ़ दशक तक महाराष्ट्र पर शासन करनेवाली कांग्रेस-राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी का अलगाव भी ज्यादा सीटों पर चुनाव लड़ने और मुख्यमंत्री पद को लेकर ही हुआ था, लेकिन दोनों ही सत्ता की दौड़ में बहुत पीछे छूट गयीं। महाराष्ट्र विधानसभा की जो तस्वीर उभरी है, उसमें नयी सरकार का गठन मुश्किल तो नहीं है, पर वह दिलचस्प अवश्य होगा।

इस मामले में हरियाणा के मतदाताओं की जितनी प्रशंसा की जाये, कम है। उन्होंने निवर्तमान विधानसभा में पहले या दूसरे नहीं, बल्कि चौथे नंबर की पार्टी को सत्ता के लिए चुना, पर उसे स्पष्ट बहुमत दिया, ताकि नयी सरकार बिना किसी दबाव के काम कर सके। हरियाणा में भाजपा का उभार अप्रत्याशित नहीं है। चुनावी परिदृश्य से ले कर सर्वेक्षणों तक ये संकेत साफ मिल रहे थे कि भाजपा हरियाणा में नया इतिहास लिखने जा रही है, लेकिन उसे अकेले दम बहुमत मिल जायेगा। इसकी उम्मीद कम ही लोगों को रही होगी। एक दशक तक सत्ता में रही कांग्रेस के विरुद्ध सत्ता विरोधी भावना साफ महसूस की जा रही थी। एक ओर जेबीटी शिक्षक भर्ती घोटाले में जेल जाने वाले पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला अपनी पार्टी इंडियन नेशनल लोकदल के लिए सहानुभूति की आस लगा रहे थे तो दूसरी ओर गठबंधन तोड़ने का ठीकरा भाजपा के सिर फोड़ कर हरियाणा जनहित कांग्रेस सुप्रीमो कुलदीप बिश्नोई भी जन सहानुभूति की उम्मीद में थे, परंतु मतदाताओं ने नेता, दल और जातीय समीकरणों के तमाम गुणा-भाग को गलत साबित करते हुए पहली बार भाजपा को सत्ता की बागडोर सौंपने का फैसला सुना दिया। कांग्रेस को तीसरे नंबर पर फिसलते हुए देख रहे राजनीतिक प्रेक्षक कम नहीं थे, लेकिन इनेलो की सीटें बढ़ने के बजाय और घट जायेंगी।इसकी उम्मीद ज्यादा लोगों को नहीं रही होगी। हजकां को बड़ी चुनावी सफलता की खुशफहमी तो खुद कुलदीप बिश्नोई को भी नहीं रही होगी, लेकिन ऐसी दुर्गति की कल्पना उनके विरोधियों ने भी नहीं की होगी। हरियाणा के चुनाव नतीजे अप्रत्याशित भले ही न हों, पर कुछ दिग्गजों की पराजय चौंकानेवाली है। शायद यह मतदाताओं, खासकर युवाओं के लकीर का फकीर बने रहने से इनकार का ऐलान भी है। वैसे महाराष्ट्र हो या हरियाणा, इन विधानसभा चुनाव परिणामों में एक और संकेत साफ पढ़ा जा सकता है कि मतदाताओं का क्षेत्रीय राजनीतिक दलों से मोहभंग हो रहा है और वास्तविक राष्ट्रीय दल के रूप में भाजपा, तेजी से कांग्रेस की जगह ले रही है। फिर आश्चर्य क्या कि इस बार उप चुनावों के नतीजे भी भाजपा के ही पक्ष में गये हैं। ■

अटूट विश्वास का प्रदर्शन

✍ बलबीर पुंज

हरियाणा और महाराष्ट्र के चुनाव परिणामों का क्या संदेश है? अगर एक वाक्य में कहना हो तो क्षेत्रीय दलों और कांग्रेस से जनता का पूरी तरह मोहभंग हो गया है और नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी एक राष्ट्रव्यापी प्रामाणिक और भरोसेमंद विकल्प के रूप में उभरी है। कभी पूरे देश में एकछत्र राज करने वाली और सौ से अधिक वर्ष पुरानी कांग्रेस देश के 29 राज्यों में से केवल 9 राज्यों में सिमट गई है। इसमें से केरल और कर्नाटक के दो बड़े राज्यों को छोड़ दें तो बाकी के उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम छोटे राज्य हैं। इन नौ प्रदेशों में लोकसभा के 88 स्थान हैं, जिसमें से पिछले चुनाव में कांग्रेस ने आधे से भी कम स्थान प्राप्त किए। कांग्रेस और झारखंड मुक्ति मोर्चा नीत झारखंड में कांग्रेस सरकार में कनिष्ठ सहयोगी हैं। इंदिरा गांधी के आपातकाल और राजीव गांधी के बोफोर्स विवाद के बाद भी पार्टी की ऐसी खराब हालत कभी नहीं रही।

अभी जो भाजपा द्वारा शासित राच्य हैं, उनकी सकल घरेलू उत्पाद में हिस्सेदारी 37 प्रतिशत से अधिक है। आज उत्तर भारत और पश्चिम भारत के अधिकांश बड़े भाग में भाजपा की सरकार है या उसके प्रभाव वाले क्षेत्र हैं। इन विधानसभा चुनाव की गहमागहमी में लोकसभा उपचुनाव का एक अत्यंत महत्वपूर्ण परिणाम चर्चा में नहीं आया। महाराष्ट्र में बीड़ सीट पर हुए उपचुनाव में दिवंगत भाजपा नेता गोपीनाथ मुंडे की पुत्री प्रीतम मुंडे ने इतिहास रचते हुए अब तक के सबसे अधिक अंतर से जीतने का रिकार्ड बनाया। यहां कांग्रेस प्रत्याशी अशोक राव शंकर राव पाटिल को करारी शिकस्त मिली है। दूसरी तरफ देश की सबसे धनी महिला सावित्री जिंदल को हरियाणा में पराजय का मुंह देखना पड़ा। अंतरराष्ट्रीय पत्रिका फोर्ब्स ने उन्हें देश की सबसे धनी महिला बताया था। हिसार सीट से कांग्रेस प्रत्याशी सावित्री जिंदल हुड्डा सरकार में मंत्री थीं। सोनिया-राहुल की रैलियों वाली हरियाणा की 6 सीटों में कांग्रेस को केवल तीन स्थानों पर जीत हासिल हुई है।

हरियाणा और महाराष्ट्र के चुनाव परिणामों का क्या संदेश है? अगर एक वाक्य में कहना हो तो क्षेत्रीय दलों और कांग्रेस से जनता का पूरी तरह मोहभंग हो गया है और नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी एक राष्ट्रव्यापी प्रामाणिक और भरोसेमंद विकल्प के रूप में उभरी है। कभी पूरे देश में एकछत्र राज करने वाली और सौ से अधिक वर्ष पुरानी कांग्रेस देश के 29 राज्यों में से केवल 9 राज्यों में सिमट गई है। इसमें से केरल और कर्नाटक के दो बड़े राज्यों को छोड़ दें तो बाकी के उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम छोटे राज्य हैं।

हरियाणा का चुनाव इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि यहां शिरोमणि अकाली दल ने अपने पारंपरिक सहयोगी भाजपा को छोड़कर अन्य का साथ दिया। यह गठबंधन धर्म का खुला उल्लंघन था और स्वाभाविक रूप से इसका असर पंजाब की राजनीति में भी पड़ेगा। दोनों ही राज्यों के चुनाव प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के योग्य नेतृत्व और देश को खुशहाल बनाने के उनके विजन पर जनता की मुहर है। इस जीत में भाजपा अध्यक्ष अमित शाह की दूरदर्शिता और प्रबंधन कौशल का भी बड़ा योगदान है। लोकसभा के चुनाव से ही प्रधानमंत्री मोदी ने चुनाव का एजेंडा विकास और सुशासन पर केंद्रित रखा वहीं कांग्रेस समेत अन्य सेक्युलर दल 'सेक्युलरवाद' की आड़ में समाज में एक भय का वातावरण निर्मित करते रहे। प्राय: हर चुनाव में कांग्रेस सेक्युलरवाद, गरीबी, आरक्षण आदि का एजेंडा लेकर लोगों के बीच जाती रही है। क्षेत्रीय दल कांग्रेस की पारंपरिक राजनीति के साथ जात-पात की गोटी बिछाते आए हैं। लोकसभा के नतीजों के बाद इन दोनों ही राज्यों के परिणामों से विकृत सेक्युलरवाद और जात-पात की राजनीति के ढहने के संकेत और पुख्ता हुए हैं। तीस सालों के बाद जनता ने स्पष्ट बहुमत देकर भाजपा को देश की कमान सौंपी है। गठबंधन की विवशता खत्म हुई है और क्षत्रपों की ब्लैकमेलिंग पॉवर पर अंकुश लगा है। महाराष्ट्र में मनसे नेता राज ठाकरे के उग्र क्षेत्रवाद को जनता ने सिरे से नकार दिया। राजनीति को प्राइवेट लिमिटेड कंपनी बनाने वाले

क्षेत्रीय दलों के लिए वर्तमान जनादेश एक सबक है। चौटाला परिवार के दुष्यंत चौटाला, भजनलाल के पुत्र चंद्रमोहन विश्नोई का हारना वंशवादी राजनीति के नकारे जाने का प्रमाण है।

लोकसभा के चुनावी दौर से ही भाजपा विरोधी दलों का यह अरण्य रोदन था कि किसी एक व्यक्ति से विकास संभव नहीं है। नरेंद्र मोदी अकेले देश को दिशा नहीं दे सकते। चुनाव के नतीजों ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि एक व्यक्ति परिस्थितियां बदल सकता है, यदि उसके पास निर्णय लेने की शक्ति हो। यदि दृढ़ इच्छाशक्ति हो और उसे विवेक के आधार पर फैसले लेने की आजादी हो तो निश्चित तौर पर बदलाव लाया जा सकता है। किंतु वंशवादी दर्प में 2004 में कांग्रेस ने लोकतंत्र के साथ जो नया प्रयोग किया उसके कारण तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के पास निर्णय लेने का अधिकार ही नहीं था। यह अधिकार सोनिया गांधी के हाथों में केंद्रित रहा।

इसके बरक्स लोगों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कामकाज और उनकी कार्यशैली को परखा और पाया कि उन्होंने चुनाव में जो वादा किया है उसे पूरा करने का दिन-रात ईमानदार प्रयास भी कर रहे हैं। यह सही है कि भाजपा सरकार को अभी सत्ता पर आए हुए कम ही समय पूरा हुआ है, किंतु धरातल पर उसके परिणाम दिखने लगे हैं। महंगाई कम हुई है, अर्थव्यवस्था पटरी पर लौट रही है और देश-विदेश में भारत की साख बढ़ी है। अपने विदेश दौरों में प्रधानमंत्री मोदी ने भारत का खोया सम्मान वापस लौटाया है। देशी-विदेशी निवेशकों का भारत में विश्वास बढ़ा है और वे यहां निवेश करने को इच्छुक हुए हैं। तमाम तथाकथित सेक्युलर दल 'सेक्युलरवाद खतरे में है' के नारे के साथ भारतीय जनता पार्टी के प्रधानमंत्री प्रत्याशी नरेंद्र मोदी का रास्ता रोकने के लिए लामबंद थे, वह नारा पूरी तरह विफल हो गया। सेक्युलरवाद के नाम पर कथित सेक्युलरिस्टों ने दशकों तक अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण की नीति चलाई, बाद में उन्होंने अल्पसंख्यकों के कट्टरवादी वर्ग को पोषित और संरक्षण देने का काम किया और अब सेक्युलरवाद के नाम पर वे आतंकवादियों के साथ खड़े नजर आते हैं।

देशहित में अपनी विकृत विचारधारा पर आत्मावलोकन करने के बजाय सेक्युलर दल अब भी भाजपा को रोकने के लिए लामबंद होने का उद्घोष कर रहे हैं, जबकि जमीनी स्तर पर मतदाताओं के विचार पूरी तरह बदल चुके हैं। भाजपा विरोध में महाजोड़ बनाने का जब-तब प्रयास करने वाले वामपंथियों का स्वयं का अस्तित्व उनकी अप्रासंगिक नीतियों के कारण खतरे में है। दलित राजनीति के बूते मुख्यमंत्री बनने वाली मायावती का लोकसभा के चुनाव में खाता ही नहीं खुला। समाजवादी पार्टी अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण के बल पर राच्य में सत्ता हासिल करने में कामयाब रही हो, किंतु लोकसभा के चुनावों ने उनके इस विश्वास को चूर-चूर कर दिया है। वंशवादी कांग्रेस ने कभी पार्टी के अंदर स्वस्थ लोकतंत्र और नेतृत्व पनपने ही नहीं दिया। सीताराम केसरी और पीवी नरसिंह राव उसके ज्वलंत उदाहरण हैं।

देशहित में अपनी विकृत विचारधारा पर आत्मावलोकन करने के बजाय सेक्युलर दल अब भी भाजपा को रोकने के लिए लामबंद होने का उद्घोष कर रहे हैं, जबकि जमीनी स्तर पर मतदाताओं के विचार पूरी तरह बदल चुके हैं। भाजपा विरोध में महाजोड़ बनाने का जब-तब प्रयास करने वाले वामपंथियों का स्वयं का अस्तित्व उनकी अप्रासंगिक नीतियों के कारण खतरे में है।

दलित राजनीति के बूते मुख्यमंत्री बनने वाली मायावती का लोकसभा के चुनाव में खाता ही नहीं खुला। समाजवादी पार्टी अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण के बल पर राच्य में सत्ता हासिल करने में कामयाब रही हो, किंतु लोकसभा के चुनावों ने उनके इस विश्वास को चूर-चूर कर दिया है। वंशवादी कांग्रेस ने कभी पार्टी के अंदर स्वस्थ लोकतंत्र और नेतृत्व पनपने ही नहीं दिया। सीताराम केसरी और पीवी नरसिंह राव उसके ज्वलंत उदाहरण हैं। वास्तव में जिन राच्यों में ऐसे दलों की सरकारें रहीं या वर्तमान समय में सत्ता पर काबिज हैं वे कभी सुशासन और खुशहाली दे पाने में कामयाब नहीं हुई हैं। देश के जनमानस को ऐसे अवसरवादी दलों से कोई उम्मीद नहीं रह गई है। कांग्रेसी कुशासन से मुक्ति पाने की छटपटाहट पूरे देश में है और वर्तमान जनादेश उसका ही द्योतक है। ■

(लेखक भाजपा के राज्यसभा सदस्य हैं)

(दैनिक जागरण से साभार)

क्षेत्रीय दलों के लिए खतरे की घंटी

✍ जगदीश उपासने

महाराष्ट्र और हरियाणा में भाजपा की आश्चर्यजनक उपलब्धि की वजहें समझने के लिए इस साल हुए लोकसभा चुनाव के नतीजों पर फिर से गौर करना समीचीन होगा। खास तौर पर उत्तर प्रदेश, बिहार और हरियाणा में भाजपा की दनदनाती विजय और पश्चिम बंगाल तथा तमिलनाडु में उसके दमदार प्रवेश में पार्टी की दीर्घकालीन रणनीति के संकेत साफ तौर पर देखे जा सकते थे।

नरेंद्र मोदी और अमित शाह की जोड़ी के 'कांग्रेस मुक्त भारत' के युद्धघोष को उनका अहंकार या लोकतंत्र-विरोधी रवैया कहकर कोसने वालों ने इस रणनीति के निहितार्थ को शायद ही गंभीरता से लिया होगा। ये निहितार्थ क्या हैं? नए, तेजी से मध्यवर्ग में बदलते और उम्मीदों-अरमानों से भरे युवा भारत के लिए अप्रासंगिक होती जा रही कांग्रेस से छुटकारा पाने का इस जोड़ी का रणघोष दरअसल उस विशाल मतदाता वर्ग की भावनाओं की ही अभिव्यक्ति है, जिसे भारत की कांग्रेस-आधिपत्य वाली राजनीति के घिसे-पिटे मुहावरे बहुत अपील नहीं करते। इसलिए भाजपा की चुनावी रणनीति का पहला और स्वाभाविक लक्ष्य वह दुर्ग ढहाना है, जो अपने ही बोझ तले चरमरा रहा है।

लेकिन मोदी-शाह जोड़ी का कांग्रेस से मुक्ति का यह लक्ष्य तब तक पूरा होना संभव नहीं, जब तक फर्जी स्थानीय अस्मिताओं की भावनाओं की सवारी गांठकर राज्यों की सत्ता में काबिज होने वाली क्षेत्रीय पार्टियों से भी छुटकारा न पा लिया जाए। इनमें से कई क्षेत्रीय दलों की ताकत से कांग्रेस को न केवल केंद्र में सत्ता की संजीवनी मिलती रही, बल्कि इनमें से कुछ उसी की कोख से जन्मी हैं। केंद्रस्थान तथा उसकी परिधि, दोनों को नगण्य किए बगैर भाजपा 'सबका साथ, सबका विकास' के एजेंडे को शायद ही पूरा कर पाए। भाजपा के 'सबका साथ' में ज्यादा जोर समाज के उस हिस्से पर है, जो उसका या तो परंपरागत समर्थक नहीं है या फिर उससे दूरी रखता रहा है। लोकसभा चुनाव में बसपा के दलित वोटों और बिहार में महादलित तथा छोटी ओबीसी जाति-वर्गों का भाजपा की तरफ खिसकना उसकी अपील के असर की बानगी देता है।

उत्तर प्रदेश, बिहार और हरियाणा में भाजपा की दनदनाती विजय और पश्चिम बंगाल तथा तमिलनाडु में उसके दमदार प्रवेश में पार्टी की दीर्घकालीन रणनीति के संकेत साफ तौर पर देखे जा सकते थे। नरेंद्र मोदी और अमित शाह की जोड़ी के 'कांग्रेस मुक्त भारत' के युद्धघोष को उनका अहंकार या लोकतंत्र-विरोधी रवैया कहकर कोसने वालों ने इस रणनीति के निहितार्थ को शायद ही गंभीरता से लिया होगा। ये निहितार्थ क्या हैं? नए, तेजी से मध्यवर्ग में बदलते और उम्मीदों-अरमानों से भरे युवा भारत के लिए अप्रासंगिक होती जा रही कांग्रेस से छुटकारा पाने का इस जोड़ी का रणघोष दरअसल उस विशाल मतदाता वर्ग की भावनाओं की ही अभिव्यक्ति है, जिसे भारत की कांग्रेस-आधिपत्य वाली राजनीति के घिसे-पिटे मुहावरे बहुत अपील नहीं करते। इसलिए भाजपा की चुनावी रणनीति का पहला और स्वाभाविक लक्ष्य वह दुर्ग ढहाना है, जो अपने ही बोझ तले चरमरा रहा है।

लेकिन कांग्रेस-संस्कृति से इतर उग्र क्षेत्रीय या जातीय अस्मिता वाली शिवसेना, इनेलो जैसे क्षेत्रीय दलों को नाथने के लिए पार्टी को ज्यादा आक्रामक रणनीति अपनाने की जरूरत थी। लोग भले ही महाराष्ट्र में शिवसेना से गठबंधन तोड़ने का सोचा-समझा जोखिम उठाने का श्रेय वर्तमान राज्य-केंद्र भाजपा नेताओं को देते हों, पर महाराष्ट्र भाजपा में बाला साहेब ठाकरे के जीवित रहते भी इसकी संभावनाएं राज्य तथा केंद्र के भाजपा नेता तलाशते रहे थे।

आखिर भाजपा ने विदर्भ और उत्तर महाराष्ट्र में अपना आधार बाला साहेब के रहते ही मजबूत किया। लेकिन तब पार्टी के पास बहुमत की ताकत नहीं थी। केंद्र में अपने बूते बहुमत और लंबे अरसे बाद मोदी जैसा सार्वजनीन नेता

आते ही भाजपा क्षेत्रीय दलों की सियासी ठेकेदारी पर लगाम लगाने में जुट गई। हरियाणा में तो पिछले 10 वर्षों से अकेले लड़ते हुए पार्टी ने 'जीटी-रोड पार्टी' की तोहमत से छुटकारा पाने के लिए सभी क्षेत्रों और सभी वर्गों में अपनी पैठ बढ़ाने पर जोर लगाया। दूसरे दलों से लिए गए प्रभावी हलकाई या जातिगत नेताओं से सजी इस सेना को मोदी जैसे किसी महारथी की ही दरकार थी।

क्षेत्रीय और जातीय अस्मिताओं के दिखावटी तेवर समाज के हर तबके के युवा मतदाता के लिए बेमानी होते जा रहे हैं, यह बात न तो शिवसेना समझ सकी, न उसकी सहोदर मनसे। पवार और उद्धव ठाकरे को प्रचार के दौरान ही अंदाज हो गया था कि भाजपा क्षेत्रीय अस्मिता के सिक्के को खोटा साबित करने पर उतारू है।

उधर मोदी हर सभा में अपनी यह टेक दोहरा रहे थे। 'न प्रांतवाद, न जातिवाद, न भाषावाद, सिर्फ विकासवाद, और विकासवाद।' यह ऐसा अस्त्र है, जिसका तोड़ पुराने खांचों तक सीमित क्षेत्रीय-प्रांतीय दलों के लिए ढूंढना मश्किल है, जिनकी सारी राजनीति कुछ जाति-वर्गों के गठजोड़ और पार्टी प्रमुख के वंश के आधार पर चलती रही है। और जिन्हें केंद्र में लूली-लंगड़ी सरकारों को समर्थन के एवज में अभयदान मिलता रहा है। पिछले तीन-साढ़े तीन दशकों से यह राजनीति खासी परवान चढ़ी, लेकिन इससे देश के प्रमुख राज्यों में सर्वांगीण विकास को ग्रहण लगा। उत्तर और दक्षिण भारत के प्रमुख क्षेत्रीय दलों के कर्ताधर्ताओं के भ्रष्टाचार के किस्सों से लोग आजिज

महाराष्ट्र और हरियाणा में भाजपा की अकेले-दम सफलता से ऐसे क्षेत्रीय दलों में घबराहट फैलना लाजिमी है। झारखंड, बिहार और उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव भाजपा का अगला निशाना होंगे, जहां पार्टी सत्ता की गंध सूंघ रही है। जम्मू-कश्मीर में इस साल के अंत में या अगले साल संभावित चुनाव में शाह संगठन को मजबूत बनाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहेंगे। पीडीपी का चुनावी सहयोग इसमें मददगार हो सकता है। 2016 में असम, जहां भाजपा की संभावनाएं हैं, पार्टी पूरी ताकत झोंक सकती है। इसी वर्ष तमिलनाडु, केरल तथा पुडुचेरी में भी चुनाव हैं। इनमें पार्टी बड़ा दांव लगाना चाहेगी। पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी भाजपा के अप्रत्याशित उभार से अभी से हलकान हैं। भाजपा के बढ़ते प्रभाव का असर ही है कि माकपा तक सीमावर्ती जिलों में आए बांग्लादेशियों में से हिंदुओं को 'धार्मिक उन्माद' के शिकार मानकर उनके प्रति अलग रवैया अपनाने की बात कहने को विवश है।

थे।

महाराष्ट्र और हरियाणा में भाजपा की अकेले-दम सफलता से ऐसे क्षेत्रीय दलों में घबराहट फैलना लाजिमी है। झारखंड, बिहार और उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव भाजपा का अगला निशाना होंगे, जहां पार्टी सत्ता की गंध सूंघ रही है। जम्मू-कश्मीर में इस साल के अंत में या अगले साल संभावित चुनाव में शाह संगठन को मजबूत बनाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहेंगे। पीडीपी का चुनावी सहयोग इसमें मददगार हो सकता है। 2016 में असम, जहां भाजपा की संभावनाएं हैं, पार्टी पूरी ताकत झोंक सकती है। इसी वर्ष तमिलनाडु, केरल तथा पुडुचेरी में भी चुनाव हैं। इनमें पार्टी बड़ा दांव लगाना चाहेगी।

पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी भाजपा के अप्रत्याशित उभार से अभी से हलकान हैं। भाजपा के बढ़ते प्रभाव का असर ही है कि माकपा तक सीमावर्ती जिलों में आए बांग्लादेशियों में से हिंदुओं को 'धार्मिक उन्माद' के शिकार मानकर उनके प्रति अलग रवैया अपनाने की बात कहने को विवश है। यानी क्षेत्रीय दलों के एजेंडे की पोल खोलकर भाजपा अपना एजेंडा तय कर सकती है। ऐसे में अगर प्रधानमंत्री मोदी चुनावी सभाओं में उठाए गए मुद्दों और आश्वासनों पर आधा भी अमल कर सके, तो भाजपा वंश-आधारित क्षेत्रीय दलों को हाशिये पर ले जाकर सबल और संपूर्ण राष्ट्रीय राजनीति की शुरुआत करने में सफल हो सकती है। ■

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

(अमर उजाला से साभार)

इस जीत का अर्थ क्या है?

✍ वेद प्रताप वैदिक

हरियाणा और महाराष्ट्र में भाजपा की विजय के अर्थ क्या हैं? इस विजय का सबसे पहला संदेश तो यह है कि यह सच्चे लोकतंत्र की विजय है। जनता के लोकतांत्रिक निर्णय को पलीता लगाने वाली चीजें हैं- जातिवाद, क्षेत्रवाद, संप्रदायवाद! इन अ-राजनीतिक दबावों से ऊपर उठ कर लोगों ने मतदान किया यानी उन्होंने निजी संबंधों के मुकाबले स्वविवेक को वरीयता दी। भावनाओं पर विवेक की विजय ही असली लोकतांत्रिकता है। हरियाणा और महाराष्ट्र में भाजपा को इस बार ऐसी जातियों, ऐसे तबकों और ऐसे क्षेत्रों से वोट मिले हैं, जहां से उसे पहले कभी नहीं मिले। यदि यह प्रवृत्ति राष्ट्रीय स्तर पर सबल होती जाए तो भारत दुनिया का सबसे बड़ा ही नहीं, सबसे अच्छा लोकतंत्र भी बन जाएगा।

दोनों राज्यों में भाजपा को अपूर्व सफलता मिली है तो कांग्रेस को भयंकर पराजय मिली है। दूसरे शब्दों में नरेंद्र मोदी का कांग्रेस मुक्त भारत का सपना साकार होता लग रहा है। कांग्रेस अब एक अखिल भारतीय क्षेत्रीय पार्टी भर रह गई है। भारतीय लोकतंत्र के लिए इसे शुभ लक्षण नहीं कहा जा सकता। एक स्वस्थ सरकार के संचालन के लिए सबल प्रतिपक्ष का होना बहुत जरुरी है। पता नहीं, अब कांग्रेस कब अपने पांवों पर खड़ी होगी? यह भी पता नहीं कि गैर-कांग्रेसी दल अब बड़े पैमाने पर इकट्ठे होंगे या नहीं? इन प्रांतीय दलों को एक करना और उनका अखिल भारतीय मोर्चा बनाना लगभग असंभव कार्य है। यह भी पता नहीं कि वे कांग्रेस के छाते के नीचे एक होना चाहेंगे या नहीं? इन सभी दलों का चरित्र कांग्रेस-जैसा ही है। सभी दल प्राइवेट लिमिटेड कंपनियां बन चुके हैं। हर दल का नेता अपना मालिक स्वयं है। वह किसी अन्य को अपना नेता कैसे स्वीकार करेगा? यह भारतीय लोकतंत्र के लिए घाटे का सौदा है।

दोनों राज्यों में भाजपा को अपूर्व सफलता मिली है तो कांग्रेस को भयंकर पराजय मिली है। दूसरे शब्दों में नरेंद्र मोदी का कांग्रेस मुक्त भारत का सपना साकार होता लग रहा है। कांग्रेस अब एक अखिल भारतीय क्षेत्रीय पार्टी भर रह गई है। भारतीय लोकतंत्र के लिए इसे शुभ लक्षण नहीं कहा जा सकता। एक स्वस्थ सरकार के संचालन के लिए सबल प्रतिपक्ष का होना बहुत जरुरी है। पता नहीं, अब कांग्रेस कब अपने पांवों पर खड़ी होगी? यह भी पता नहीं कि गैर-कांग्रेसी दल अब बड़े पैमाने पर इकट्ठे होंगे या नहीं? इन प्रांतीय दलों को एक करना और उनका अखिल भारतीय मोर्चा बनाना लगभग असंभव कार्य है। यह भी पता नहीं कि वे कांग्रेस के छाते के नीचे एक होना चाहेंगे या नहीं? इन सभी दलों का चरित्र कांग्रेस-जैसा ही है। सभी दल प्राइवेट लिमिटेड कंपनियां बन चुके हैं। हर दल का नेता अपना मालिक स्वयं है। वह किसी अन्य को अपना नेता कैसे स्वीकार करेगा? यह भारतीय लोकतंत्र के लिए घाटे का सौदा है।

इन दोनों राज्यों के चुनाव से यह संकेत भी उभरा है कि मोदी लहर अब भी कायम है। यदि नरेंद्र मोदी दोनों राज्यों में घूम-घूमकर प्रचार नहीं करते तो भाजपा को विजय तो मिलती लेकिन ऐसी नहीं मिलती कि वह सरकार बना सके। दोनों राज्यों में भाजपा और कांग्रेस के गठबंधन टूट गए। यह टूट सिद्ध करती है कि राजनीति का अर्थ शुद्ध सत्ता है। सभी घटकों को खुद पर गरुर था लेकिन चुनाव परिणाम ने भाजपा को सही साबित कर दिया। सबको अपने-अपने वजन का सही-सही पता चल गया। क्योंकि सत्ता ही ब्रह्म है, इसलिए टूटे हुए गठबंधन शायद फिर जुड़ जाएं। या सत्ता के खातिर नए गठबंधन भी जुड़ सकते हैं। यह भी असंभव नहीं कि क्षेत्रीय दलों का पराभव शुरु हो जाए और देश में दो-दलीय व्यवस्था मजबूत होने लगे। अगर ऐसा हो तो भारतीय लोकतंत्र काफी स्वस्थ और सबल हो जाएगा।

इन दोनों राज्यों में भाजपा की विजय केंद्र सरकार के लिए वरदान सिद्ध हो सकती है। हरियाणा दिल्ली का सबसे निकट का राज्य है। अब भाजपा जब चाहे लाखों लोगों को दिल्ली में जमा कर सकती है। मुंबई भारत की वित्तीय राजधानी है। दिल्ली और मुंबई, दोनों दो पटरियों की तरह भाजपा की रेल को तेजी से चला सकती हैं। नए और शक्तिशाली भारत को खड़ा करने में अब ज्यादा आसानी होगी।

(नया इंडिया से साभार)

मोदी प्रभाव का विस्तार

नीरजा चौधरी

महाराष्ट्र और हरियाणा के विधानसभा चुनाव के नतीजे देश के राजनीतिक परिदृश्य में नरेंद्र मोदी के प्रभाव का एक और प्रमाण हैं और कांग्रेस के लिए खतरे की तेज घंटी। दोनों राज्यों में सत्तारूढ़ कांग्रेस की पराजय यह बताती है कि उसका आधार तेजी से खिसक रहा है और यह आधार भाजपा के साथ जुड़ रहा है। भारतीय राजनीति का यह एक बड़ा बदलाव है। मोदी असहाय महसूस कर रहे लोगों के लिए एक नया आकर्षण और प्रेरणा हैं। लोग यह महसूस कर रहे हैं कि कुछ हो नहीं रहा है, वे पारंपरिक राजनीति से ऊब चुके हैं। मोदी ने इसी माहौल में भारतीय राजनीति में अपने कदम बढ़ाए हैं। उन्हें एक के बाद एक सफलता भी मिल रही है। कुल मिलाकर भारतीय राजनीति के समीकरण नए तरह से लिखे जा रहे हैं। भाजपा की यह बढ़त कई राज्यों में विरोधी राजनीतिक दलों को बिहार मॉडल पर एकजुट होने के लिए मजबूर कर सकती है।

राजनीतिक दलों को चुनाव नतीजों के संदेश को समझना होगा। हरियाणा में 51 प्रतिशत मतदाता युवा हैं। बदलाव की उनकी बेचैनी चुनाव नतीजों में झलकती है। दूसरे राच्यों में भी ऐसा हो सकता है। भाजपा फिलहाल मतदाताओं के एक बड़े वर्ग को प्रभावित कर रही है। हरियाणा में उसकी सफलता विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जबकि महाराष्ट्र में बहुमत से कुछ दूर रहने के बावजूद पार्टी का प्रदर्शन प्रभावशाली है। हरियाणा में भाजपा चार सीटों की अपनी ताकत में अकल्पनीय तरीके से 12 गुना वृद्धि करने में सफल रही और उसका वोट प्रतिशत तीन गुना तक बढ़ गया। अकेले रोहतक विधानसभा सीट का नतीजा यह बताने के लिए काफी है कि हरियाणा में भाजपा ने कितनी बड़ी कामयाबी हासिल की है। भूपेंद्र सिंह हुड्डा के इस गढ़ में भाजपा की सेंध राजनीतिक तस्वीर में आए बदलाव की बानगी है। हरियाणा की राजनीति प्रारंभ से जाट और गैर-जाट जातियों के समीकरणों पर आधारित रही है। भाजपा की इस सफलता का मतलब है कि उसे गैर-जाट जातियों का भरपूर समर्थन मिला और जाटों के एक तबके ने भी उसके पक्ष में मतदान किया। मैंने हरियाणा में अपने भ्रमण के दौरान यह महसूस किया कि सभी जातियों की महिलाओं के बीच मोदी के पक्ष में एक छिपी लहर थी। चुनाव में इतनी बड़ी कामयाबी के लिए इस तरह की लहर जरूरी होती है। मोदी ने लोगों की कल्पना और विश्वास को जीता है। दो राज्यों में महत्वपूर्ण जीत से मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार का आत्मविश्वास भी बढ़ना तय है। उसने सुधारों के सिलसिले की शुरुआत पहले ही कर दी है। डीजल के संदर्भ में बड़ा निर्णय इसकी ताजा कड़ी है। चूंकि मोदी ने दोनों राज्यों के चुनावों में अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा भी संबद्ध कर दी थी इसलिए स्वाभाविक रूप से वह राहत महसूस कर रहे होंगे और सुधारों की अपनी प्रक्रिया पर तेजी से आगे बढ़ना चाहेंगे। दोनों राज्यों में मोदी ने 35 से अधिक रैलियों को संबोधित किया। उनका चुनाव प्रचार स्थानीय नेताओं से भी ज्यादा था। इससे जाहिर होता है कि वह इन चुनावों के लिए किस हद तक गंभीर थे। अगर मोदी ने अपनी चमक और प्रभाव से लोगों को प्रभावित किया तो यह मानना होगा कि अमित शाह बूथ स्तर के मैनेजमेंट में एक बार फिर कामयाब रहे। मोदी और अमित शाह भाजपा अथवा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के इस एजेंडे को आगे बढ़ाते नजर आ रहे हैं कि राजनीति दो दलों पर आधारित होनी चाहिए।

महाराष्ट्र और हरियाणा के विधानसभा चुनाव के नतीजे देश के राजनीतिक परिदृश्य में नरेंद्र मोदी के प्रभाव का एक और प्रमाण हैं और कांग्रेस के लिए खतरे की तेज घंटी। दोनों राज्यों में सत्तारूढ़ कांग्रेस की पराजय यह बताती है कि उसका आधार तेजी से खिसक रहा है और यह आधार भाजपा के साथ जुड़ रहा है। भारतीय राजनीति का यह एक बड़ा बदलाव है। मोदी असहाय महसूस कर रहे लोगों के लिए एक नया आकर्षण और प्रेरणा हैं। लोग यह महसूस कर रहे हैं कि कुछ हो नहीं रहा है, वे पारंपरिक राजनीति से ऊब चुके हैं।

यह नतीजे जितने भाजपा के लिए उत्साहजनक हैं उतने ही कांग्रेस के लिए निराशाजनक। कांग्रेस को एक क्षेत्रीय दल इनेलो ने तीसरे नंबर पर पहुंचा दिया। इनेलो इससे अच्छा भी प्रदर्शन कर सकती थी, लेकिन ओमप्रकाश चौटाला के अतिरिक्त पार्टी के पास कोई नेतृत्व नहीं है। लोगों ने यह महसूस किया कि चौटाला सजायाफ्ता होने के कारण मुख्यमंत्री नहीं बन सकते हैं और कोई अन्य पार्टी को नेतृत्व देने की स्थिति में नहीं है।

जहां तक महाराष्ट्र का प्रश्न है तो भाजपा इससे संतुष्ट हो सकती है कि शिवसेना से अलग होने का उसका फैसला उस पर भारी नहीं पड़ा, लेकिन पार्टी को अपनी भावी दिशा के बारे में थोड़ा-बहुत विचार जरूर करना होगा। वह अकेले दम आगे बढ़ने की अपनी रणनीति में हमेशा सफल नहीं हो सकती। भाजपा ने भले ही कांग्रेस

शेष पृष्ठ 20 पर

साहसी फैसले की जीत

✍ प्रशांत मिश्र

लोकसभा चुनाव के बाद एक बार फिर नरेंद्र दामोदर दास मोदी और अमित शाह की टीम ने अपने चुनाव प्रचार और प्रबंधन का लोहा मनवा दिया। हरियाणा में चार सीटों से लगभग 12 गुना लंबी छलांग लगाकर भाजपा सरकार बनाने जा रही है। तो महाराष्ट्र में भी छोटे भाई की भूमिका से उबरकर भाजपा ने यह बता दिया है कि यहां भी सिक्का उसी का चलेगा। अपने पुराने बड़े भाई शिवसेना के मुकाबले भाजपा लगभग दोगुनी आगे है। यह अलग बात है कि महाराष्ट्र में सरकार बनाने के लिए उसे समर्थन की जरूरत होगी। भाजपा के लिए सबसे स्वाभाविक साथी शिवसेना है, लेकिन उसके मोलभाव की गुंजाइश को राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी ने बिना शर्त समर्थन देने की बात कहकर ध्वस्त कर दिया है। वैसे भी परिणामों के आत्मविश्वास से लबरेज भाजपा किसी की शर्तें पर काम नहीं करेगी। शर्तें उसकी अपनी ही होंगी। तथ्य यह भी है कि हरियाणा और महाराष्ट्र, दोनों ही जगह क्षेत्रीय व जातीय समीकरण नेस्तनाबूद हुए हैं। महाराष्ट्र में केवल कोंकण ही अपवाद है। इन चुनाव परिणामों ने न केवल क्षेत्रीय दलों व नेताओं के दर्प को तोड़ा है, बल्कि प्रधानमंत्री मोदी के 'कांग्रेस मुक्त भारत' के सिक्के को और चमकाया है।

प्रधानमंत्री बनने से लगभग सात-आठ महीने पहले नरेंद्र मोदी ने भाजपा के लिए रास्ता तय कर दिया था। तालकटोरा स्टेडियम में भाजपा की एक बैठक में उन्होंने ऐलान किया था कि जनता में बदलाव के लिए तड़प देखते हुए भाजपा को अपनी शक्ति पहचान लेनी चाहिए और अपनी ही शर्तें पर आगे बढ़ना चाहिए। मंत्र था- भाजपा मजबूत होगी तो साथी भी आएंगे और गठबंधन भी मजबूत बनेगा। लोकसभा चुनाव में उस मंत्र की परख भी हो गई थी। जाहिर है कि विधानसभा चुनाव में भी मोदी-शाह की टीम उसी मंत्र पर काम करने वाली थी और फिर से उसका असर भी दिखा और मोदी का साहस भी। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में साहस ज्यादा अहम इसलिए है, क्योंकि लोकसभा की बड़ी जीत के बाद विधानसभा चुनाव में रिस्क लेने से बचा जा सकता था, लेकिन मोदी ने शाह के साथ मिलकर न सिर्फ फैसला लिया, बल्कि चुनाव में खुद को पूरी तरह से झोंक भी दिया। खासतौर पर तब जबकि मोदी को इसका अहसास था कि सफलता न मिलने की दशा में वह विपक्ष के सीधे निशाने पर होते। आत्मविश्वास से लबरेज भाजपा ने हरियाणा में कुलदीप बिश्नोई की नाजायज शर्तें मानने के बजाय उसे छिटक जाने दिया। पार्टी ने मोदी को श्मैस्कटश बनाकर चुनाव लड़ने की ठान ली थी। पूरे जाट समुदाय को अपनी संपत्ति समझने वाले हुड्डा और चौटाला को नतीजों ने बता दिया कि भाजपा के पक्ष में न केवल जाट बंटा, बल्कि खाप और दलित भी खुलकर आए। लोकसभा चुनाव की तरह ही हरियाणा में युवा और महिला मतदाता की पहली पसंद मोदी ही रहे हैं। दूसरी तरफ पूरे चुनाव में नेतृत्वविहीन दिखी कांग्रेस को दोनों ही प्रदेशों में सत्ता की सीढ़ी से फिसलकर नंबर तीन की पार्टी बनना पड़ा। केंद्र की तरह इन राच्यों में भी कांग्रेस मुख्य विपक्षी दल बनने के भी काबिल नहीं रही। दरअसल राहुल गांधी हरदम चुनाव की सीधी चुनौती लेने से बचते रहे हैं, पार्टी उन्हें बचाती रही है। दूसरी तरफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ताकत यही रही है कि वह खुलेआम चुनौती लेते हैं। विपक्ष उन पर जितना हमला करता है वह उतना ही मजबूत होकर उभरते हैं। हरियाणा और महाराष्ट्र में मोदी फिर से अपनी ही कसौटी पर खरे उतरे हैं। महाराष्ट्र में अधिक सीटें लेकर स्ट्राइक रेट में पिछड़ने वाली शिवसेना जिस तरह से इस बार मोलभाव पर उतारू थी वह भाजपा को मंजूर नहीं था। 1980 में जन्मी भाजपा उस वक्त राज्य में 145 सीटों पर चुनाव लड़ी थी और उसे 14 सीटें हासिल हुई थीं। लगभग समान विचारधारा वाली शिवसेना से उसका समझौता 1990 में हुआ था। तब से लेकर अब तक भाजपा को छोटा भाई बनकर राज्य में चुनाव लड़ना कबूल था, लेकिन बाला साहेब ठाकरे के बाद शिवसेना में सबसे पहले विघटन परिवार से ही शुरू हुआ। उद्धव ठाकरे न तो

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ताकत यही रही है कि वह खुलेआम चुनौती लेते हैं। विपक्ष उन पर जितना हमला करता है वह उतना ही मजबूत होकर उभरते हैं। हरियाणा और महाराष्ट्र में मोदी फिर से अपनी ही कसौटी पर खरे उतरे हैं।

उतने राजनीतिक परिपक्व थे और न ही मन से वह बाला साहेब की विरासत के लिए संभवत: तैयार थे। बाला साहेब के निधन के बाद यह संभवत: लाजिमी था कि उम्र और राष्ट्रीय राजनीति में अपरिपक्व उद्धव को न तो भाजपा वह सम्मान देने के लिए तैयार थी और न ही शर्तें मानने के लिए। गठबंधन के पहले जब सीटों के बंटवारे को लेकर बात आई तो भाजपा अपनी तरफ से नरमी दिखाने के लिए तैयार थी। उसकी मांग थी कि अनुपातिक रूप से अच्छा स्ट्राइक रेट होने की वजह से उसे बंटवारे में भी उचित हिस्सेदारी मिलनी चाहिए। भाजपा ने 127 सीट अपने लिए और 14 सीट दूसरे छोटे सहयोगियों के लिए मांगी थी। शिवसेना जिन 60 सीटों पर कभी चुनाव नहीं जीत सकी थी उसमें से हिस्सेदारी मांगी जा रही थी, लेकिन शिवसेना टस से मस होने को तैयार नहीं थी। गठबंधन टूटना उसी दिन तय हो गया था जब उद्धव ने साफ कह दिया था कि वह 151 सीटों से नीचे उतरने को तैयार नहीं। परिणाम आज सबके सामने है। शायद उद्धव भूल गए थे या फिर उन्हें यह मालूम ही न था कि लोकतांत्रिक राजनीति में शर्तें जनता तय करती है। उसका आकलन लोकप्रियता से होता है और वह भाजपा और मोदी के पक्ष में था। हठधर्मिता से चुनाव तो दूर पार्टी के अंदर भी नेतृत्व चलाना लंबे समय तक आसान नहीं है। संभवत: यह चुनाव उद्धव को परिपक्व बना दे और भविष्य की रणनीति तय करने में वह इसका ख्याल रखें। शिवसेना को इसका पता चल गया है कि शहरों में अब तक उसकी जीत इसीलिए होती थी कि भाजपा उसके साथ थी। हठधर्मिता अभी भी जारी रही तो इसका खामियाजा मुंबई, नासिक, पुणे जैसे बड़े शहरों के म्युनिसिपल कारपोरेशन में भुगतना पड़ सकता है। शायद शिवसेना यह गलती न दोहराए। भाजपा संसदीय बोर्ड की बैठक के पहले पार्टी अध्यक्ष अमित शाह ने दोहराया कि भाजपा गठबंधन धर्म का निर्वाह करती है और दोनों राज्यों में कहीं भी अपनी ओर से गठबंधन नहीं तोड़ा।

लोकसभा के बाद विधानसभा चुनाव एक तरफ कांग्रेस के लिए और दूसरी तरफ क्षेत्रीय दलों के लिए फिर से एक सबक हैं। कांग्रेस का आधार सिमटता जा रहा है और पहली बार चुनावी राजनीति जात-पात से हटकर विकास के मुद्दे पर केंद्रित होती दिख रही है। हाल के विधानसभा उपचुनावों के नतीजे के बाद भाजपा को मिली इस नई जीत ने इसे स्थापित कर दिया है। उपचुनाव परिणामों की सामान्य चुनाव से तुलना नहीं की जानी चाहिए। भाजपा के लिए बड़ी बात यह थी कि उसने अपना आत्मविश्वास नहीं खोया और शाह के माइक्रो मैनेजमेंट ने रंग दिखा दिया। यह आत्मविश्वास ही था कि उत्तार प्रदेश के उपचुनाव में पटखनी खाने के बाद शाह ने लखनऊ में जाकर ही समाजवादी पार्टी को चुनौती दी थी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रतिनिधि सभा की बैठक के बाद शाह ने कहा था-अगर नेताजी तैयार हों तो उत्तर प्रदेश में भाजपा अभी भी विधानसभा चुनाव के लिए तैयार है। सपा की ओर से इसका जवाब नहीं आया। वहां 2017 में चुनाव होने हैं। इसकी प्रतिध्वनि झारखंड और जम्मू-कश्मीर के आगामी विधानसभा चुनावों में भी दिखेगी। अगले ही साल बिहार में भी चुनाव होने हैं और उसके बाद 2016 में पश्चिम बंगाल और केरल में।■

(लेखक दैनिक जागरण के राजनीतिक संपादक हैं)

पृष्ठ 18 का शेष...

को सीमित कर दिया हो, लेकिन हरियाणा में इनेलो और महाराष्ट्र में शिवसेना तथा एनसीपी की उपस्थिति यह बताती है कि क्षेत्रीय दलों का युग अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। भाजपा को राजग की परिकल्पना से दूर जाने से बचना होगा। राजग की अभी भी अहमियत है और कई ऐसे राज्य हैं जहां भाजपा को क्षेत्रीय दलों के सहयोग की जरूरत होगी। सवाल यही है कि क्या मोदी और विशेषकर भाजपा का नेतृत्व राजग को बनाए रखने और उसके विस्तार के बारे में विचार करेगा? महाराष्ट्र में भाजपा की जीत के संदर्भ में इतना हल्ला मच गया था कि बहुमत से 20-25 सीटें कम रह जाने को पार्टी एक धक्के के रूप में देख सकती है। भाजपा और शिवसेना का गठबंधन ऊपरी तौर पर मुख्यमंत्री के मुद्दे पर टूटा था, लेकिन अब जनता ने यह फैसला सुना दिया है कि मुख्यमंत्री किस दल से होना चाहिए?

शिवसेना को इस नतीजे का संदेश समझना चाहिए। चुनाव के दौरान इन दोनों स्वाभाविक सहयोगियों के बीच कुछ कटुता आ गई थी, लेकिन अब दोनों के बीच नरमी दिखनी चाहिए। महाराष्ट्र शुरुआत से कांग्रेस के वर्चस्व वाला क्षेत्र रहा है-इस हद तक कि उन शरद पवार को भी अंतत: कांग्रेस के पास आना पड़ा था जो अपने जनाधार के दम पर उससे अलग हो गए थे। इस लिहाज से ये नतीजे कांग्रेस के लिए बहुत बड़ा झटका हैं। उसके हाथ से एक के बाद एक बड़े राज्य छिटकते जा रहे हैं और उसकी वापसी के आसार भी नजर नहीं आते। पार्टी को अपनी रीति-नीति और तौर-तरीकों पर नई दृष्टि डालने की आवश्यकता है।■ *(दैनिक जागरण से साभार)*

(लेखिका जानी-मानी राजनीतिक विश्लेषक हैं)

बरकरार है मोदी का करिश्मा

✍ प्रदीप सिंह

विधानसभा चुनाव के नतीजों का असर देश की राजनीति पर हो, ऐसे अवसर कम ही आते हैं। महाराष्ट्र और हरियाणा विधानसभा के चुनाव के नतीजे के कई निहितार्थ हैं। इन नतीजों से एक बात निर्विवाद रूप से कही जा सकती है कि देश में एक दल के प्रभुत्व का दौर लौट रहा है। भाजपा अब कांग्रेस की जगह देश की सबसे बड़ी पार्टी के रूप में राज्यों में भी स्थापित होने की राह पर है। इन चुनावों ने एक बात और स्थापित की है कि इंदिरा गांधी के बाद नरेंद्र मोदी वोट दिलाने वाले देश के सबसे बड़े नेता हैं। लेकिन चिंता की बात यह है कि विपक्ष का दायरा घटता जा रहा है। भाजपा जिस अनुपात में बढ़ रही है, उसी अनुपात में कांग्रेस घट रही है। नरेंद्र मोदी और भाजपा ने इन दोनों राज्यों के चुनावों में अकेले लड़ने का फैसला करके एक जोखिम उठाया था। दोनों राज्यों में पार्टी की हार की आंच सीधे प्रधानमंत्री तक पहुंचती। खासतौर से ऐसी परिस्थिति में जब गठबंधन के साथ चुनाव लड़ने पर जीत तय मानी जा रही हो। इसके बावजूद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी प्रतिष्ठा दांव पर लगा दी। महाराष्ट्र में भाजपा-शिवसेना गठबंधन टूटने का फायदा एनसीपी और कांग्रेस को हुआ है। दोनों दल पूरी तरह साफ होने की शर्मिंदगी से बच गए। बल्कि कह सकते हैं कि एनसीपी ने अपनी इज्जत बचा ली है। उसका वोट बढ़ा है। सीटें कम भले हुई हैं, पर इससे भी कम की उम्मीद थी। शरद पवार ने अपने किले को पूरी तरह ढहने से बचा लिया है। राज्य में भाजपा की संभावित सरकार को बाहर से समर्थन देने की घोषणा करके शरद पवार अब भ्रष्टाचार में फंसे अपने लोगों को बचाने का उपाय कर रहे हैं। लेकिन कांग्रेस को क्या कहें। राज्य की सत्तारूढ़ पार्टी जो पंद्रह साल से सरकार में थी, पहले नंबर से चौथे नंबर पर पहुंच गई। फिर भी कह रही है कि उतना नहीं हारे जितना हार सकते थे। इस मासूमियत पर कौन न कुर्बान हो जाए। पैर के नीचे से जमीन लगातार खिसकती जा रही है लेकिन कांग्रेस और उसके नेताओं को यकीन ही नहीं हो रहा। यह मासूमियत ओढ़ी हुई है या वास्तविक, कहना कठिन है। लेकिन नुक्सान दोनों ही हालत में है। क्योंकि जब तक आपको वास्तविकता का एहसास नहीं होगा तब तक सुधार के कदम नहीं उठा सकते। शिवसेना तय नहीं कर पा रही है कि वह इन नतीजों से खुश हो या दुखी। क्योंकि मतदाता ने उसे पूरा दिया नहीं। आधे के लिए वह भाजपा पर निर्भर हो गई है। लेकिन उसे इस बात की ज्यादा खुशी है कि भाजपा को उसकी जरूरत है। जरूरत है यानी सौदेबाजी के लिए मैदान खुला है। उसने शुरुआत कर दी है। उसके नेता कह रहे हैं कि मुख्यमंत्री पद से कम पर बात नहीं बनेगी। मुख्यमंत्री पद भी चाहिए और कह रहे हैं कि नरेंद्र मोदी की महाराष्ट्र में कोई लहर नहीं है। मतलब कि हम तुम्हें गाली देंगे और तुम हमें मुख्यमंत्री पद दो। राजनीति में ऐसा व्यवहार शिवसेना ही कर सकती है। शिवसेना के नेता हकीकत जानने के बाद भी उसे मानने को तैयार नहीं हैं। शिवसेना की राजनीति से भाजपा पीछा छुड़ाना चाहती है। इसलिए वह शिवसेना की मांग एक हद के बाद नहीं मानेगी यह तय है। ऐसे में शिवसेना में टूट की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। इस मामले में एनसीपी ने भाजपा की सरकार को बाहर से समर्थन देने की घोषणा करके भाजपा को शिवसेना से बचा लिया है। लेकिन सवाल है कि अब शिवसेना को कौन बचाएगा!

नतीजे प्रमाण हैं कि लोकसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में मतदाता ने जो विश्वास जाहिर किया था, वह अभी क्षीण नहीं हुआ है। बिना प्रादेशिक नेतृत्व और कमजोर संगठन के होने के बावजूद इन दोनों राज्यों में पार्टी को सत्ता में लाकर मोदी ने साबित किया है कि लोगों का उन पर भरोसा अभी कायम है। लेकिन इस नतीजे से कांग्रेस में बहुत से मुंह खुल जाएंगे। सोनिया गांधी पार्टी में बढ़ रहे असंतोष के पतीले पर जो ढक्कन लगाकर बैठी थीं, उसमें उबाल से ढक्कन अब खुल जाएगा।

भाजपा के लिए महाराष्ट्र अवसर और चुनौती एक साथ लेकर आया है। चुनाव नतीजे एक तरह से मुनाफे में घाटे

शेष पृष्ठ 23 पर

एनडीए ने निरन्तर काला धन का पता लगाने की प्रतिबद्धता जताई है

✍ अरुण जेटली

कुछेक अखबारों में ऐसे शीर्षकों को पढ़कर मुझे थोड़ी हैरानी हुई जिसमें कहा गया है कि एनडीए सरकार ने स्विस बैंक में जमा काला धन के मुद्दे पर यू-टर्न ले लिया है। यह बात सच्चाई से कहीं दूर है।

मैं इतना बता देना चाहता हूं कि एनडीए सरकार किसी भी प्रकार की सूचना नहीं रोकेगी, परन्तु उन नामों को तभी बता पाएगी जब जांच की प्रक्रिया पूरी हो जाए और इस निष्कर्ष पर पहुंचा जाए कि काले धन की मात्रा कितनी है। ऐसा होने के बाद खाताधारियों के सार्वजनिक कर दिए जाएंगे जब ऐसे दोषियों के खिलाफ आयकर द्वारा दायर शिकायत की अदालती कार्यवाही सम्पन्न हो जाए। खाताधारियों के नामों को अदालती कार्यवाही से पहले खोलना जांच को प्रभावित करेगा और ऐसा करने से ये दोषी छूट जाएंगे। इससे अन्य देशों के साथ भारत के दोहरे कराधान निवारण समझौते (डीटीएए) पर भी प्रभाव पड़ेगा और उन देशों से और आगे मिलने वाली सूचना प्राप्ति भी रूक जाएगी।

एनडीए सरकार ने मई 2014 के अन्तिम सप्ताह में कार्यभार संभाला। पिछले तीन वर्षों से यूपीए सरकार सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर एसआईटी की नियुक्ति करने से इंकार करती रही है। मंत्रिमण्डल की पहली ही बैठक में श्री नरेन्द्र मोदी ने एसआईटी बिठाने का फैसला किया। तब से एसआईटी प्रभावकारी ढंग से कामकाज कर रही है।

15 अक्तूबर 2014 को राजस्व सचिव के नेतृत्व में अधिकारियों की एक टीम ने और सीबीडीटी के चैयरमैन ने स्विट्जरलैण्ड में उपयुक्त अधिकारियों के साथ एक संयुक्त वक्तव्य पर हस्ताक्षर किए थे। इस करार के चार महत्वपूर्ण पहलू इस प्रकार है:

(i) एचएसबीसी में खाताधारियों के भारत में उपलब्ध सूची के बारे में, जहां भारत के कर-अधिकारियों ने स्वतंत्र जांच की है, वहां स्विस भारत को इस बारे में पर्याप्त साक्ष्य देकर विस्तृत जानकारी देगा।

एनडीए सरकार किसी भी प्रकार की सूचना नहीं रोकेगी, परन्तु उन नामों को तभी बता पाएगी जब जांच की प्रक्रिया पूरी हो जाए और इस निष्कर्ष पर पहुंचा जाए कि काले धन की मात्रा कितनी है। ऐसा होने के बाद खाताधारियों के सार्वजनिक कर दिए जाएंगे जब ऐसे दोषियों के खिलाफ आयकर द्वारा दायर शिकायत की अदालती कार्यवाही सम्पन्न हो जाए। खाताधारियों के नामों को अदालती कार्यवाही से पहले खोलना जांच को प्रभावित करेगा और ऐसा करने से ये दोषी छूट जाएंगे।

(ii) जहां कहीं भारत के पास कोई सूचना/दस्तावेजी साक्ष्य होगा, स्विस उसकी प्राधिकारिता या उस साक्ष्य के प्रमाण की पुष्टि करेगा।

(iii) इसे समयबद्ध ढंग से किया जाएगा।

(iv) बैंकिंग प्रणाली में सूचना के ऑटोमैटिक एक्सचेंज पर द्विपक्षीय करार की अब शुरूआत हो जाएगी अगर यह द्विपक्षीय व्यवस्था नतीजे पर पहुंचती है तो यह स्विस बैंक के भारतीयों द्वारा रखे काला धन का पता लगाने की दिशा में महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा।

उपर्युक्त के अलावा भारत की सुप्रीम कोर्ट ने ''काला धन मामले'' में भारत सरकार को निर्देश दिया है कि वह याचिकाकर्ता का नाम बताए जिसे जर्मनी ने भारत को दिया है। यह नाम याचिकाकर्ता के दिए गए जिसने उन्हें सार्वजनिक किया है। जर्मनी ने इस पर डबल टैक्स एवाइडेंस एग्रीमेंट (डीटीएए) का उल्लंघन बताया है जो 19 जून 1955 को भारत सरकार और जर्मनी के बीच हुआ था। वर्तमान एनडीए सरकार ने दुर्भाग्यवश उसी डीटीएए को विरासत में प्राप्त किया है। हमने कहीं बेहतर समझौते पर बात की है। यदि हम संधि को खत्म करें तो हमें कोई आगे की सूचना नहीं मिल पाएगी। इस संधि का यही मतलब है कि खाताधारियों के नामों और इसके अन्तर्गत प्राप्त सूचना को तभी खोला जा पाएगा जब न्यायालय में आरोप

फाइल कर दिए जाएं। स्पष्ट है कि इसे राजनैतिक प्रोपगेंडा या राजनैतिक माइलेज के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है।

सरकार ने सुप्रीम कोर्ट ने इतना ही अनुरोध किया है, वह स्पष्ट करे कि उसने भारत सरकार को ऐसे देशों के साथ संधियां करने का निषेध न हो जिनमें सरकार को अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप प्राप्त सूचना की गोपनीयता बनाने की वचनबद्धता पर अमल नहीं किया जाता है तो हमें ऑफशोर वित्तीय केन्द्रों और टैक्स हैवन सहित अन्य देशों में रखे गए छुपाए काला धन के बारे में कोई सूचना नहीं मिल पाएगी। इस प्रकार सुप्रीम कोर्ट से मांगे गए स्पष्टीकरण में विदेशों से रखे गए अवैध धन के बारे में सूचना इकट्ठी करने की सुविधा मात्र है।

किसी ने कभी भी यह सुझाव नहीं दिया कि नामों को सार्वजनिक किया जाए। ये नाम कानून की वर्तमान प्रक्रिया के अनुसार ही किए जा सकते हैं। यदि इस प्रक्रिया का उल्लंघन होगा तो आपको भविष्य में नाम जानने का कभी अवसर नहीं मिलेगा। एनडीए सरकार पूरी तरह से नामों का पता लगाने, दोषियों पर मुकद्दमा चलाने तथा उनके नाम घोषित करने के प्रति वचनबद्ध है। हम ऐसा कोई जोखिम भरा कदम नहीं उठा सकते हैं जिसमें किसी संधि का उल्लंघन हो और फिर हम तर्क दें कि हमें दूसरे देशों का सहयोग नहीं मिल पा रहा है। इस प्रकार के दृष्टिकोण से तो कालाधन खाताधारियों को ही वास्तव में मदद मिलेगी। जोखिम भरा कदम उठाना अल्पदृष्टि का परिचायक है। परिपक्व दृष्टिकोण ही हमें इस मामले में जड़ तक पहुंचा पाएगी। ■

(लेखक केन्द्रीय वित्त एवं रक्षामंत्री हैं।)

पृष्ठ 21 का शेष...

वाली स्थिति हैं। उसे उम्मीद से कम सीटें मिली हैं। उम्मीद क्या करती है, इसका उदाहरण भाजपा है। महाराष्ट्र के प्रदेश बनने के बाद से इस राज्य में भाजपा तीसरे-चौथे नंबर की पार्टी रही है। अब वह एकदम से पहले नंबर की पार्टी बन गई है। इसके बावजूद उसके विरोधी ऐसी तस्वीर पेश कर रहे हैं मानो वह हार गई हो। चौथे नंबर की पार्टी छह महीने से भी कम समय में पहले नंबर पर आ जाए तो यह कोई सामान्य बात नहीं है। लेकिन पहले नंबर पर आना जितना मुश्किल था उससे भी ज्यादा मुश्किल मतदाताओं की अपेक्षा पर खरा उतरना है। हरियाणा एक ऐसा राज्य है जो और चाहे जिस बात के लिए जाना जाता हो, पर विचारधारा की राजनीति के लिए तो नहीं ही जाना जाता। वहां एक विचारधारा पर आधारित पार्टी को स्पष्ट बहुमत मिलना आश्चर्य से कम नहीं है। हरियाणा में आज तक भाजपा को जो भी मिला है गठबंधन के जरिए ही। वह हरियाणा में हाशिए की पार्टी थी। विधानसभा का पिछला चुनाव अकेले लड़कर उसे चार सीटें मिली थीं। राज्य में पार्टी का कोई संगठन भी नहीं है। जिस राज्य में जाट मतदाता राजनीति को संचालित करते हों वहां जाटों में उसका कोई जनाधार नहीं है। ऐसे में भाजपा को अकेले दम पर सत्ता में लाने का श्रेय सिर्फ मोदी को जाता है। इस जनादेश से हरियाणा की जनता ने कांग्रेस के भ्रष्ट शासन से राज्य को मुक्ति तो दिलाई ही है, साथ ही यह भी बता दिया कि वह तिहाड़ से किसी को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाने के लिए तैयार नहीं है। हरियाणा की राजनीति अब एक नए रास्ते पर जा रही है। इस राजनीति ने कांग्रेस को हाशिए पर धकेल दिया है। सत्ता से बाहर हुई कांग्रेस मुख्य विपक्षी दल भी नहीं बन पाई। राजनीति का यह नया स्वरूप इन प्रदेशों में ही नहीं, राष्ट्रीय स्तर पर भी दिखेगा। भाजपा की ताकत इस नतीजे से बढ़ेगी। केवल इसलिए नहीं कि दो और राज्यों में उसकी सरकार बन गई। इसलिए भी कि उसे केंद्रीय योजनाओं को लागू कराने के लिए दो और सरकारें मिल गई। इससे राज्यसभा में भी उसकी संख्या बढ़ेगी। उप चुनावों में भाजपा की हार के बाद मोदी का प्रभाव खत्म होने की बात करने वालों का मुंह महाराष्ट्र और हरियाणा की जनता ने फिलहाल बंद करा दिया है। नतीजे प्रमाण हैं कि लोकसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में मतदाता ने जो विश्वास जाहिर किया था, वह अभी क्षीण नहीं हुआ है। बिना प्रादेशिक नेतृत्व और कमजोर संगठन के होने के बावजूद इन दोनों राज्यों में पार्टी को सत्ता में लाकर मोदी ने साबित किया है कि लोगों का उन पर भरोसा अभी कायम है। लेकिन इस नतीजे से कांग्रेस में बहुत से मुंह खुल जाएंगे। सोनिया गांधी पार्टी में बढ़ रहे असंतोष के पतीले पर जो ढक्कन लगाकर बैठी थीं, उसमें उबाल से ढक्कन अब खुल जाएगा। कांग्रेस को अपने भावी नेतृत्व के बारे में कोई फैसला करना ही पड़ेगा। फैसला गांधी परिवार को करना है। फैसले को टालने का विकल्प अब सोनिया गांधी के पास नहीं रह गया है। कांग्रेस मुख्यालय के बाहर 'प्रियंका लाओ देश बचाओ' के लगने वाले नारे में दरअसल किसी को हटाने की मांग भी छिपी है। कांग्रेस के लिए बेहद विकट स्थिति बन गई है। वह भीतर के संघर्ष से उबरे तो बाहर के संघर्ष के बारे में सोचे। ■

(राष्ट्रीय सहारा से साभार)

वैचारिकी

राष्ट्रवाद की सही कल्पना

✍ दीनदयाल उपाध्याय

अंग्रेजों के शासनकाल में देश में जितने भी आन्दोलन चले और देश की जितनी भी राजनीति थीं, उन सबका एक ही लक्ष्य था कि अंग्रेजों को हटाकर हम स्वराज्य प्राप्त करें। स्वराज्य के बाद हमारा रूप क्या होगा? हम किस दिशा में आगे बढ़ेंगे? इसका बहुत कुछ विचार नहीं हुआ था। 'बहुत कुछ' शब्द का मैंने प्रयोग इसलिए किया है कि 'बिल्कुल विचार नहीं हुआ था' यह कहना ठीक न होगा। ऐसे लोग थे कि जिन्होंने उस समय भी बहुत-सी बातों पर विचार किया था। स्वयं गांधी जी ने 'हिन्द स्वराज्य' लिखकर उसमें 'स्वराज्य' आने के बाद भारत का चित्र क्या होगा, इस पर अपने विचार रखे थे। उसके पहले लोकमान्य तिलक ने भी 'गीता रहस्य' लिखकर सम्पूर्ण आन्दोलन के पीछे की तात्विक भूमिका क्या होगी, इसका विवेचन किया था। साथ ही उस समय दुनिया में जो भिन्न-भिन्न विचार-सरणियाँ चल रही थीं, उनकी भी तुलनात्मक दृष्टि से आलोचना की थी।

इसके अतिरिक्त समय-समय पर कांग्रेस या दूसरे राजनैतिक दलों ने जो प्रस्ताव स्वीकार किये, उनमें भी ये विचार आये थे। किन्तु उन सबका जितना गम्भीर अध्ययन होना चाहिए था, उतना उस समय तक नहीं हुआ था। क्योंकि सबके सामने प्रमुख प्रश्न यही था कि पहले हम अंग्रेजों को निकाले फिर अपने घर का निर्माण कैसे करेंगे, इसका विचार कर लेंगे। इसलिए यदि विचारों के मतभेद भी कहीं थे तो लोगों ने उनको दबा करके रखा था। यहाँ तक कि समाजवाद के आधार पर आगे का भारत बनना चाहिए, इस तरह का विचार करने वाले जो लोग थे, वे कांग्रेस के अंदर ही एक सोशलिस्ट पार्टी बनाकर काम करते रहे। उसके बाहर निकलकर उन्होंने अलग से कार्य करने का प्रयत्न नहीं किया। क्रान्तिकारी भी अपने-अपने विचारों के अनुसार स्वराज्य के लिए काम करते थे। इसी प्रकार और भी लोग थे। किन्तु प्रमुखता इसी बात की रही कि पहले देश को आजाद कर लिया जाए।

अत: देश आजाद होने के बाद स्वाभाविक रूप से यह सवाल हम सब लोगों के सामने आना चाहिए था कि अब हमारे देश की दिशा क्या होगी? किन्तु सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि देश की स्वतन्त्रता के बाद भी जितना गम्भीर रूप से इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए था, उतने गम्भीर रूप से लोगों ने विचार नहीं किया और आज भी जब 16-17 वर्ष देश को स्वतन्त्र हुए हो गए, हम यह नहीं कह सकते कि कोई दिशा निश्चित हो गयी है।

भारत किधर जाने वाला है?

समय-समय पर कांग्रेस या दूसरे दल के लोगों ने कल्याणकारी राज्य, समाजवाद, उदारमतवाद, आदि का ध्येय अवश्य घोषित किया है। विविध नारे लगाये गए हैं। परन्तु ये जितने नारे लगाने वाले लोग हैं, उनके सामने उन सब विचारधाराओं का नारे से अधिक कोई महत्व नहीं रहता। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूं कि इसका मुझे अनुभव है। एक बार एक सज्जन से बातचीत हो रही थी। वह कह रहे थे कि कांग्रेस के विरुद्ध मिल-जुलकर अपने को एक मोर्चा बनाना चाहिए ताकि अच्छी तरह से लड़ सकें। राजनीतिक दृष्टि से समय-समय पर इस प्रकार की नीतियाँ लेकर दल चलते हैं और इसलिए उनके इस प्रस्ताव में तो कोई अनुचित बात नहीं थी। परन्तु बात करते-करते मैंने सहज में पूछ लिया कि 'हम लोग मोर्चा तो शायद बना लेंगे परन्तु कुछ थोड़ा-बहुत कार्यक्रम पर भी विचार कर लिया जाए तो बहुत अच्छा होगा। कौन-सा आर्थिक कार्यक्रम लेकर चलें? कौन-सा राजनैतिक कार्यक्रम लेकर चलें? इन प्रश्नों पर भी विचार करना चाहिए।'

इस पर उन्होंने सहजभाव से कह दिया कि इसकी कोई चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं हैं, आपको जो पसन्द हो स्वीकार कर लीजिए। हम तो घोर साम्यवादी कार्यक्रम से लेकर बिल्कुल पूंजीवादी कार्यक्रम तक जो आप चाहें उसका समर्थन कर देंगे। उनको किसी भी कार्यक्रम में कोई आपत्ति नहीं थी। उद्देश्य केवल इतना ही था कि किसी-न-किसी तरीके से कांग्रेस को हरा देना चाहिए। आज भी बहुत बार लोग कहते हैं कि कम्युनिस्टों तथा बाकी सब लोगों से मिलकर भी काग्रेस को हरा दिया जाए।

साँप-नेवला एक साथ

केरल में अभी-अभी चुनाव हुए हैं। उसमें कम्युनिस्ट, मुस्लिम लीग, स्वतंत्र पार्टी, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, विद्रोही कांग्रेस, जो केरल कांग्रेस के नाम से आई, क्रान्तिकारी सोशलिस्ट पार्टी आदि जितनी भी पार्टियाँ हैं, इनमें आपस में भिन्न-भिन्न प्रकार से गठबन्धन हुए। इन गठबन्धनों के कारण यह पता नहीं लग सकता था कि इनके कोई राजनीतिक सिद्धान्त, विचार अथवा आदर्श भी हैं या नहीं। विचारों की दृष्टि से यह स्थिति है। कांग्रेस में भी यही बात दिखाई दे रही है। यद्यपि कांग्रेस ने प्रजातन्त्रीय समाजवाद का सिद्धान्त स्वीकार किया है तथापि कांग्रेस के लोग जो बोलते हैं उसमें यही दिखाई देता है कि वहाँ पर एक निश्चित सिद्धान्त, निश्चित कार्यक्रम नहीं। घोर कम्युनिस्ट विचारधारा वाले भी कांग्रेस के अन्दर विद्यमान हैं और उस कम्युनिज्म का डटकर विरोध करते हुए पूँजीवादी विचारधारा वाले भी कांग्रेस के अन्दर मौजूद हैं। 'अहि-नकुल योग' के अनुसार नकुल और सांप के सह-अस्तित्व का कोई यदि जादू का पिटारा हो सकता है तो वह आज की कांग्रेस है।

एक बार एक सज्जन से बातचीत हो रही थी। वह कह रहे थे कि कांग्रेस के विरुद्ध मिल-जुलकर अपने को एक मोर्चा बनाना चाहिए ताकि अच्छी तरह से लड़ सकें। राजनीतिक दृष्टि से समय-समय पर इस प्रकार की नीतियाँ लेकर दल चलते हैं और इसलिए उनके इस प्रस्ताव में तो कोई अनुचित बात नहीं थी। परन्तु बात करते-करते मैंने सहज में पूछ लिया कि 'हम लोग मोर्चा तो शायद बना लेंगे परन्तु कुछ थोड़ा-बहुत कार्यक्रम पर भी विचार कर लिया जाए तो बहुत अच्छा होगा। कौन-सा आर्थिक कार्यक्रम लेकर चलें? कौन-सा राजनैतिक कार्यक्रम लेकर चलें? इन प्रश्नों पर भी विचार करना चाहिए।'

हमें आत्माभिमुख होना पड़ेगा

इस स्थिति में हम आगे बढ़ सकेंगे या नहीं, इसका हमें विचार करना चाहिए। देश में आज की अनेक समस्याओं की कारण-मीमांसा करें तो पता चलेगा कि अपने गन्तव्य और उसकी दिशा का अज्ञान बहुतांश में आज की अव्यवस्था के लिए जिम्मेदार है। यह तो मैं मानता हूं कि हिन्दुस्थान के सभी 45 करोड़ लोग सब प्रश्नों पर अथवा किसी एक प्रश्न पर भी पूर्णत: एक विचार और एक मत नहीं हो सकते। किसी भी देश में यह सम्भव नहीं है। फिर भी राष्ट्र की एक सामान्य इच्छा नाम की कोई चीज होती है। उसको आधार बनाकर काम किया जाए तो सर्वमान्य व्यक्ति को लगता है कि मेरे मन के मुताबिक काम हो रहा हैं। उसमें से विचारों की अधिकतम एकता भी पैदा होती है। अक्तूबर-नवम्बर 1962 में कम्युनिस्ट चीन के आक्रमण के समय जनता की अवस्था इस तथ्य का अच्छा उदाहरण है। उस समय देश में एक उत्साह की लहर पैदा हो गई थी। कर्म और त्याग दोनों की शक्ति जाग्रत हो गई थी। जनता और मरकार के बीच, भिन्न-भिन्न दलों के बीच तथा नेता और जनता के बीच कोई खाई नहीं दिखाई देती थी। यह सब कैसे हुआ? परकीय सत्ता द्वारा लाई गयी आपत्ति ने हमें आत्माभिमुख किया। सरकार ने वह नीति अपनाई जो जनता के मन के अनुसार तथा पुरुषार्थ का आह्वान करने वाली थी। फलत: हम एक होकर खड़े हो गये।

समस्याओं का कारण-'स्व' के प्रति दुर्लक्ष्य

आवश्यकता है कि अपने 'स्व' का विचार किया जाए। बिना उनके स्वराज्य का कोई अर्थ नहीं। स्वतन्त्रता हमारे विकास और सुख का साधन नहीं बन सकती। जब तक हमें अपनी असलियत का पता नहीं तब हमें अपनी शक्तियों का ज्ञान नहीं हो सकता और न उनका विकास ही सम्भव है। परतन्त्रता में समाज का 'स्व' दब जाता है। इसीलिए राष्ट्र स्वराज्य की कामना करते है जिससे वे अपनी प्रकृति और गुणधर्म के अनुसार प्रयत्न करते हुए सुख की अनुभूति कर सकें। प्रकृति बलवती होती है। उसके प्रतिकूल काम करने से अथवा उसकी ओर दुर्लक्ष्य करने से कष्ट होते हैं। प्रकृति का उन्नयन कर उसे 'संस्कृति' बनाया जा सकता है, पर उसकी अवहेलना नहीं की जा सकती। आधुनिक मनोविज्ञान बताता है कि किस प्रकार मानव-प्रकृति एवं भावों की अवहेलना से व्यक्ति के जीवन में अनेक

रोग पैदा हो जाते है। ऐसा व्यक्ति प्राय: उदासीन एवं अनमना रहता है। उसकी कर्म-शक्ति क्षीण हो जाती है अथवा विकृत होकर विपथगामिनी बन जाती है। व्यक्ति के समान राष्ट्र भी प्रकृति के प्रतिकूल चलने पर अनेक व्यथाओं का शिकार बनता है। आज भारत की अनेक समस्याओं का यही कारण है।

राजनीति में अवसरवादिता

राष्ट्र का मार्गदर्शन करने वाले तथा राजनीति के क्षेत्र में काम करने वाले अधिकांश व्यक्ति इस प्रश्न की ओर उदासीन हैं। फलत: भारत की राजनीति, अवसरवादी एवं सिद्धान्तहीन व्यक्तियों का अखाड़ा बन गई है। राजनीतिज्ञों तथा राजनीतिक दलों के न कोई सिद्धान्त एवं आदर्श हैं और न कोई आचार-संहिता। एक दल छोड़कर दूसरे दल में जाने में व्यक्ति को कोई संकोच नहीं होता। दलों के विघटन अथवा विभिन्न दलों की युक्ति भी होती है तो वह किसी तात्विक मतभेद अथवा समानता के आधार पर नहीं अपितु उसके मूल में चुनाव और पद ही प्रमुख रूप से रहते हैं। 1937 में जब हाफिज मुहम्मद इब्राहीम मुस्लिम लीग के टिकट पर चुने जाने के बाद कांग्रेस में सम्मिलित हुए तो उन्होंने स्वस्थ राजनीतिक परम्परा के अनुसार विधानसभा से त्याग-पत्र देकर पुन: कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ा और जीतकर आए 1948 में जब कांग्रेस से अलग हटकर सोशलिस्ट पार्टी का निर्माण हुआ तब सभी सोशलिस्टों ने, जो विधानमण्डलों के सदस्य थे त्याग-पत्र देकर अपने-अपने क्षेत्र से पुन: चुनाव लड़े। किन्तु उसके बाद किसी ने इस परम्परा का निर्वाह नहीं किया। अब राजनीतिक क्षेत्र में पूर्ण स्वैराचार है। इसी का परिणाम है कि आज भी सभी के विषय मे जनता के मन में समान रूप से अनास्था है। ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं कि जिसकी आचरणहीनता के विषय में कुछ कहा जाए तो जनता विश्वास न करे। इस स्थिति को बदलना होगा। बिना उसके समाज में व्यवस्था और एकता स्थापित नहीं की जा सकती।

हम किस ओर चलें? राष्ट्र के सामने यह प्रश्न है। कुछ लोग कहते हैं कि राष्ट्र के परतन्त्र होने के पूर्व-एक हजार वर्ष पहले, जहाँ हमने राष्ट्र जीवन का सूत्र छोड़ दिया था- वहीं से हम उसे आगे बढ़ाएं। पर राष्ट्र कोई वस्त्र या पुस्तक के समान निर्जीव वस्तु तो है नहीं जिसे बुनते या पढ़ते समय जहाँ एक बार छोड़ दिया, वहाँ से फिर किसी विशेष अवधि के बाद उसे आगे बढ़ाया जा सके। फिर यह कहना भी युक्तिसंगत नहीं होगा कि परतन्त्रता के साथ एक हजार वर्ष पूर्व हमारे जीवन का सूत्र एकदम टूट गया है तथा तब से अब तक हम पूर्णतया निष्क्रिय अथवा गतिहीन रहे हैं। बदली हुई परिस्थितियों में अपने जीवन को बनाये रखने तथा स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करने में अपनें जीवन को अभिव्यक्त किया। हमारे जीवन का प्रवाह अवरुद्ध नहीं अपितु आगे बढ़ता गया। गंगा की धारा को लौटाने का प्रयत्न बुद्धिमानी नहीं होगी। बनारस की गंगा हरिद्वार के समान शीतल एवं स्वच्छ चाहे न हो, परन्तु उतनी ही पवित्र एवं मुक्तिदायिनी है। उसमें मिलने वाले जिन नदी-नालों को उसने आत्मसात कर लिया है उनकी कलुषा तथा गन्दगी की ओर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं। वे गंगा में मिलकर गंगा ही बन गये हैं। अब तो गंगा के प्रवाह को आगे ही बढ़ना होगा।

हम केवल स्वार्थी न रहकर दुनिया की प्रगति में सहयोगी बनें। यदि हमारे पास कोई ऐसी चीज है जिससे कि विश्व को लाभ होगा तो वह देने में हमें कोई एतराज नहीं होना चाहिए, मिलावट के जमाने के अनुरूप विशुद्ध विचारों को विकृत करके उनका मिश्रित रूप न लें बल्कि, उसको सुधार कर तथा मन्थन करके ग्रहण करना चाहिए। हमें विश्व पर बोझ बनकर नहीं, उसकी समस्याओं के छुटकारे में सहायक बनकर रहना चाहिए। हमारी परम्परा और संस्कृति विश्व को क्या दे सकती है? यह भी विचार करना चाहिए।

यदि सम्पूर्ण स्थिति इतनी ही होती तब तो कोई कठिनाई नहीं थी। विश्व में हम अकेले ही तो नही हैं। दूसरे राष्ट्र भी हैं। उन्होंने पिछले एक हजार वर्ष में अभूतपूर्व उन्नति की है। हमारा सम्पूर्ण ध्यान तो अपनी स्वतन्त्रता के लिए लड़ने तथा अपनी रक्षा के प्रयत्नों में ही लगा रहा है। विश्व की इस प्रगति में हम सहभागी नहीं हो सके। अब जब हम स्वतन्त्र हो गये हैं तो क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं हो जाता कि हम अपनी इस कमी को शीघ्रातिशीघ्र पूरा करके विश्व के इन प्रगत देशों के साथ खड़े हो जाएँ? यहां तक तो, मैं समझता हूं, मतभेद की कोई गुंजाइश नहीं है।

स्वदेशी की भावना सर्वव्यापी हो

समस्या तब पैदा होती है, जब हम पश्चिम की प्रगति के कारणों तथा परिणामों अथवा वास्तविकता एवं भासमान के सम्बन्ध में ठीक-ठीक निर्णय नहीं कर पाते। यह कठिनाई तब और बढ़ जाती है जब हम यह देखते हैं कि इन देशों में से ही एक ने हमारे ऊपर डेढ़ सौ वर्षो तक राज्य किया तथा अपने

राज्यकाल में उसने ऐसे अनेक उपाय किये जिससे हमारे अन्दर अपने सम्बन्ध में तिरस्कार तथा उनके विषय में आदर का भाव पैदा हो जाए। पश्चिम के ज्ञान-विज्ञान के साथ ही पश्चिमी देशों के रहन-सहन, बोलचाल, खानपान आदि के तरीके भी इस देश में आये। भौतिक-विज्ञान ही नहीं अपितु नीतिशास्त्र, राज्य-व्यवस्था, अर्थनीति तथा समाज धारणा के क्षेत्र में भी इन देशों के मानदण्ड हमारे मानक बन गये। आज भारत के शिक्षित वर्ग के जीवन मूल्यों पर पश्चिम का यह प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। हमें निर्णय करना पड़ेगा कि यह प्रभाव अच्छा है या बुरा। जब तक अंग्रेज थे तब तक तो हम स्वदेशी की भावना से अंग्रेजियत को दूर रखने में ही गौरव समझते थे, किन्तु अब जब अंग्रेज चला गया है तब अंग्रेजियत पश्चिम की प्रगति का द्योतक एवं माध्यम बनकर अनुकरण की वस्तु बन गयी है। यदि यह सत्य है तो संकुचित राष्ट्रीयता के भाप को आड़े लाकर राष्ट्र की प्रगति में बाधा डालना ठीक नहीं होगा। किन्तु इसके विपरीत पाश्चात्य जीवन मूल्यों और विज्ञान की प्रगति को यदि अलग किया जा सकता है तो अंग्रेजियत के मोहावरण का परित्याग करना ही हमारे लिए श्रेयस्कर होगा। पर कुछ लोग ऐसे भी हैं जो पाश्चात्य राजनीति एवं अर्थनीति की दिशा को ही प्रगति की दिशा समझते हैं और इसलिए भारत पर वहां की स्थिति का प्रक्षेपण करना चाहते हैं। अत: भारत की भावी दिशा का निर्णय करने से पूर्व यह उचित होगा कि हम पश्चिम की राजनीति के वैचारिक अधिष्ठान तथा उनकी वर्तमान पहेली का विचार कर ले।

यूरोप में राष्ट्रों का उदय

जिन विचारधाराओं ने यूरोपीय राजनीति एवं जीवन को विशेषत: प्रभावित किया है उनमें राष्ट्रवाद, प्रजातन्त्र तथा समाजवाद की प्रमुख रूप से गणना की जा सकती है। इसके साथ ही विश्व-एकता तथा शान्ति का स्वप्न देखने वाले भी वहाँ हुए हैं और उस दिशा में भी कुछ प्रयत्न किये जा रहे है।

इन विचारों में राष्ट्रवाद सबसे पुराना तथा बलशाली है। रोम के साम्राज्य के पतन के बाद तथा रोमन कैथोलिक चर्च के प्रति विद्रोह अथवा उसके प्रभाव में कमी के कारण यूरोप में राष्ट्रों का उदय हुआ। यूरोप का पिछला एक हजार वर्ष का इतिहास इन राष्ट्रों के आविर्भाव तथा पारस्परिक संघर्ष का इतिहास है। इन राष्ट्रों ने यूरोप महाद्वीप से बाहर जाकर अपने उपनिवेश बनाये तथा दूसरे स्वतन्त्र देशों को गुलाम बनाया। राष्ट्रवाद के उदय के कारण राष्ट्र और राज्य की एकता की प्रवृत्ति भी बढ़ी तथा राष्ट्रीय राज्य (National States) का यूरोप में उदय हुआ। साथ ही रोमन कैथोलिक चर्च के केन्द्रीय प्रभाव में कभी होकर या तो राष्ट्रीय चर्च का निर्माण हुआ या मजहब का। मजहबी गुरुओं का राजनीति में कोई विशेष स्थान नहीं रहा। सेक्युलर स्टेट की कल्पना का इस प्रकार जन्म हुआ।

यूरोप में प्रजातन्त्र का जन्म

दूसरी क्रान्तिकारी कल्पना प्रजातन्त्र की है जिसका यूरोप की राजनीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव हुआ है। प्रारम्भ में तो जितने राष्ट्र बने उनमें राजा ही शासनकर्ता रहा, किन्तु राजा की निरंकुशता के विरुद्ध जनता में भी धीरे-धीरे जागरण हुआ। औद्योगिक क्रान्ति के कारण तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के परिणामस्वरूप सभी देशों में एक वैश्य वर्ग का प्रादुर्भाव हुआ। स्वभावत: इनका पुराने सामन्तों तथा राजाओं से संघर्ष आया। इस संघर्ष ने 'प्रजातन्त्र' की तात्विक भूमिका ग्रहण की। यूनान के नगर-गणराज्यों से इस विचार का उद्‌गम ढूंढा गया। प्रत्येक नागरिक की समानता, बन्धुता और स्वतन्त्रता के आदर्श के सहारे जनसाधारण को इस तत्व के प्रति आकृष्ट किया गया। फ्रांस में बड़ी भारी राज्यक्रांति हुई। इंग्लैण्ड में भी समय-समय पर आन्दोलन हुए। प्रजातन्त्र की जनगण पर पकड़ हुई। राजवंश या तो समाप्त कर दिये गये अथवा उनके अधिकार मर्यादित कर वैधानिक राज्यपद्धति की नींव डाली गई। आज प्रजातन्त्र यूरोप की मान्य पद्धति है। जिन्होंने प्रजातन्त्र की अवहेलना की वे भी प्रजातन्त्र के प्रति निष्ठा व्यक्त करने में कमी नहीं करते। हिटलर, मुसोलिनी तथा स्टालिन जैसे तानाशाहों ने भी प्रजातन्त्र को अमान्य नहीं किया।

व्यक्ति का शोषण होता रहा

प्रजातन्त्र ने यद्यपि प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार दिया, किन्तु जिन लोगों नें प्रजातन्त्र के संघर्ष का नेतृत्व किया था शक्ति उन्हीं के हाथों में रही। औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप उत्पादन की नई पद्धति पर विश्वास हो गया था। स्वतन्त्र रहकर घर में काम करने वाला मजदूर अब कारखानेदार का नौकर बनकर काम करने लगा था। अपना गाँव छोड़कर वह नगरों में आ बसा था। वहाँ उसके आवास की व्यवस्था बहुत ही अधूरी थी। कारखाने में जिस ढंग सें काम होता था, उसके कोई नियम नहीं थे। मजदूर असंगठित एवं दुर्बल था। वह शोषण, अन्याय और उत्पीड़न का शिकार बन गया था। राज्य की शक्ति जिनके हाथों में थी, वे भी उसी वर्ग में से थे, जो उनका शोषण कर रहे थे। अत: राज्य से कोई भी आशा नहीं थी।

इस अन्यायपूर्ण अवस्था के विरुद्ध विद्रोह तथा स्थिति में सुधार की भावना

लेकर कई महापुरुष खड़े हुए। उन्होंने अपने आपको समाजवादी कहा। कार्लमार्क्स भी इन समाजवादियों में से एक है। उसने विद्यमान अन्याय का विरोध करने के प्रयत्न में अर्थ-व्यवस्था तथा इतिहास का अध्ययन कर एक विश्लेषण प्रस्तुत किया। कार्लमार्क्स की विवेचना के बाद समाजवाद एक वैज्ञानिक आधार पर खड़ा हो गया। बाद के समाजवादियों ने मार्क्स को माना हो या न, किन्तु उनके विचारों पर उसकी छाप अवश्य है।

सर्वहारा की तानाशाही

वैज्ञानिक समाजवाद के अनुसार उत्पादन के साधनों का व्यक्तिगत स्वामित्व ही शोषण की जड़ है। यदि इन साधनों को समाज (जो इनकी निगाहों में राज्य ही है) के हाथों में दे दिया जाय तो शोषण समाप्त हो जायेगा। किन्तु इसके पूर्व राज्य को 'शोषक वर्ग' के चंगुल से निकालना होगा तथा व्यवस्था करनी होगी कि वह उनके अधीन कभी न रहे। इस हेतु प्रोलिटेरिएट डिक्टेटरशिप (Dictatorship of the Proletariat) अर्थात् 'सर्वहारा की तानाशाही' कायम करनी होगी। समाज इस तानाशाही को सहन कर ले, इस हेतु उसके सामने यह आदर्श भी रखा गया कि शोषकों की समाप्ति तथा उनके द्वारा प्रति क्रान्ति की सभी सम्भावनाओं के नष्ट होने के उपरान्त, राज्य की फिर आवश्यकता नहीं होगी। तब एक राज्यविहीन आदर्श समाज की उत्पत्ति होगी। कार्लमार्क्स ने अर्थव्यवस्था का विवेचन कर यह भी बताया कि पूँजीवाद में ही उसके विनाश के बीज छिपे हुए हैं तथा समाजवाद अवश्यम्भावी है।

अनेक वादों से त्रस्त : मार्ग कोई नहीं

यूरोप के कुछ देशों में समाजवाद के नाम पर राजनैतिक क्रान्तियाँ हुई। जहाँ लोगों ने समाजवाद को स्वीकार नहीं किया वहाँ भी राज्यकर्ताओं को मजदूरों के अधिकारों को मान्य करना पड़ा तथा कल्याणकारी राज्य का आदर्श सामने रखा गया।

राष्ट्रवाद, प्रजातन्त्र, समाजवाद या समता समाजवाद के मूल में समता का ही भाव है; समता समानता से भिन्न है, इसे Equitability का पर्याय मान सकते हैं। इन तीन प्रवृत्तियों ने यूरोप की राजनीति को प्रभावित किया है। ये सब ऐसे आदर्श हैं जो अच्छे हैं। मानव की दैवी प्रवृत्तियों में से इनका जन्म हुआ है। किन्तु अपने में कोई भी विचार पूर्ण नहीं। इतना ही नहीं, इनमें से प्रत्येक आदर्श, व्यवहार में एक दूसरे का घातक बन जाता है। राष्ट्रवाद विश्वशान्ति के लिए खतरा पैदा करता है। प्रजातन्त्र पूंजीवाद के मेल से शोषण का कारण बन गया। पूंजीवाद को समाप्त कर समाजवाद आया तो उसने प्रजातन्त्र तथा उसके साथ ही व्यक्ति की स्वतन्त्रता की ही बलि ले ली। अत: आज पश्चिम के सामने यह प्रश्न खड़ा है कि इन सभी अच्छी बातों का ताल-मेल कैसे बैठाया जाय?

भिन्न समाज : भिन्न विचार

पश्चिम के लोग यह तालमेल नहीं बैठा पाये। हाँ! गमय-समय पर वहाँ कुछ लोगों ने इन विचारों में से कुछ को महत्व देकर उनका गठजोड़ करने का अवश्य प्रयत्न किया है। इंग्लैण्ड ने प्रजातन्त्र और राष्ट्रवाद का मेल बैठाकर अपना राजनैतिक ढाँचा विकसित किया, किन्तु फ्रांस यह काम नही कर पाया। वहाँ प्रजातन्त्र राष्ट्र के लिए अस्थिरता का कारण बन गया। ब्रिटेन की लेबर पार्टी समाजवाद और प्रजातन्त्र का मेल बैठाकर चलना चाहती है। किन्तु वहाँ ऐसे लोग हैं जो आशंका प्रकट कर रहे है कि यदि समाजवाद आया तो प्रजातन्त्र नहीं रहेगा। लेबर पार्टी भी अब समाजवाद के नाम पर राष्ट्रीयकरण की उतनी समर्थक नही रही जितना 'वैज्ञानिक समाजवाद' चाहता है। उसका समाजवाद कुछ नरम हो गया है। हिटलर और मुसोलिनी ने नेशनल सोशलिज्म अपनाया। उन्होंने प्रजातन्त्र को तिलांजलि दे दी। अन्त में सोशलिज्म भी उनके नेशनलिज्म का अनुचर बन गया तथा उनका राष्ट्रवाद विश्व के लिए संकट। बेशक आज दुनिया से हम कुछ लें, परन्तु दुनिया ऐसी स्थिति में नहीं है कि यह हमारा कुछ मार्गदर्शन कर सके। वह तो स्वयं चौराहे पर है। ऐसी अवस्था में हम उससे किसी प्रकार का मार्गदर्शन नहीं पा सकते। हमें तो यह सोचना चाहिए कि अब तक की दुनिया की प्रगति देखते हुए कहीं ऐसी भी गुंजाइश है या नहीं कि हम उसकी प्रगति में अपना भी योगदान कर सकें? दुनिया की प्रगति का अध्ययन कर लेने के बाद क्या हम भी उन्हें कुछ दे सकते हैं? यह विचार हमें दुनिया के अंग बनकर करना चाहिये।

हम केवल स्वार्थी न रहकर दुनिया की प्रगति में सहयोगी बनें। यदि हमारे पास कोई ऐसी चीज है जिससे कि विश्व को लाभ होगा तो वह देने में हमें कोई एतराज नहीं होना चाहिए, मिलावट के जमाने के अनुरूप विशुद्ध विचारों को विकृत करके उनका मिश्रित रूप न लें बल्कि, उसको सुधार कर तथा मन्थन करके ग्रहण करना चाहिए। हमें विश्व पर बोझ बनकर नहीं, उसकी समस्याओं के छुटकारे में सहायक बनकर रहना चाहिए। हमारी परम्परा और संस्कृति विश्व को क्या दे सकती है? यह भी विचार करना चाहिए। ■

('एकात्म मानववाद' पुस्तक से साभार)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्रमेव जयते कार्यक्रम का शुभारंभ

'श्रमेव जयते पहल से व्यवसाय करना आसान होगा'

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने श्रमिकों की नजर से श्रम मुद्दों को समझने की पुरजोर वकालत की, ताकि उन्हें संजीदगी के साथ सुलझाया जा सके। नई दिल्ली में पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्रमेव जयते कार्यक्रम में पांच नई पहलों की शुरुआत के बाद अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने कहा कि इस तरह का सम्मानजनक नजरिया अपनाने से 'श्रम योगी' (श्रमिक) पहले 'राष्ट्र योगी' और फिर 'राष्ट्र निर्माता' बन जायेंगे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि राष्ट्र के विकास में 'श्रमेव जयते' की उतनी ही अहमियत है जितनी 'सत्यमेव जयते' की है।

श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि सरकार को अपने नागरिकों पर अवश्य भरोसा करना चाहिए और दस्तावेजों के स्व-प्रमाणन की इजाजत देकर इस दिशा में एक बड़ा कदम उठाया गया है। उन्होंने कहा कि श्रमेव जयते कार्यक्रम के तहत जिन विभिन्न पहलों की शुरुआत की गई है, वे भी इस दिशा में अहम कदम हैं।

प्रधानमंत्री ने एक साथ अनेक योजनाओं का शुभारंभ करने के लिए श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के प्रयासों की सराहना की है, जिनके अंतर्गत श्रमिकों के साथ-साथ नियोजकों के हितों का भी ख्याल रखा गया है। उन्हों ने कहा कि श्रम सुविधा पोर्टल ने महज एक ऑनलाइन फॉर्म के जरिये 16 श्रम कानूनों का अनुपालन आसान कर दिया है।

उन्होंने कहा कि निरीक्षण के लिए यूनिटों का अनियमित चयन करने की पारदर्शी 'श्रम निरीक्षण योजना' से इंस्पेक्टर राज की बुराइयों से निजात मिलेगी और इसके साथ ही कानूनों का बेहतर ढंग से पालन भी सुनिश्चित होगा।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर चिंता व्यक्त की कि कर्मचारी भविष्य निधि संगठन में 27,000 करोड़ रुपये की विशाल राशि बगैर दावे के पड़ी है। उन्होंने कहा कि यह रकम भारत के गरीब श्रमिकों के पसीने की कमाई है। उन्होंने यह भी कहा कि यूनिवर्सल एकाउंट नम्बेर के जरिये कर्मचारी भविष्य निधि में सुनिश्चित की गई पोर्टेबिलिटी से इस तरह की रकम के फंस जाने और वास्तविक लाभार्थियों तक उसके न पहुंच पाने की समस्या से निजात मिल जायेगी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि व्यावसायिक प्रशिक्षण के राष्ट्रीय ब्रांड अम्बेसडर नियुक्त करने की पहल से आईटीआई विद्यार्थियों का गौरव और विश्वास बढ़ेगा। प्रधानमंत्री ने इस मौके पर चुनिंदा ब्रांड अम्बेसडरों को सम्मानित भी किया। प्रशिक्षु प्रोत्साहन योजना और असंगठित क्षेत्र के कामगारों के लिए पुनर्गठित राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना (आरएसबीवाई) के कारगर क्रियान्वयन का भी शुभारंभ किया गया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि 'श्रमेव जयते' कार्यक्रम दरअसल 'मेक इन इंडिया' विजन का ही एक अहम हिस्सा है, क्योकि इससे बड़ी संख्या में युवाओं का कौशल विकास करने का रास्ता साफ होगा और इसके साथ ही भारत को आने वाले वर्षों में काबिल कर्मचारियों की वैश्विक जरूरत को पूरा करने का अवसर भी मिलेगा।

इस अवसर पर केन्द्रीय मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, श्री कलराज मिश्र, श्री अनंत गीते तथा डॉ. हर्षवर्धन और केन्द्रीय श्रम राज्य मंत्री श्री विष्णु देव साय भी उपस्थित थे। ■

प्रधानमंत्री ने सांसद आदर्श ग्राम योजना की शुरूआत की

'ग्रामीण विकास मांग और भागीदारी पर आधारित होना चाहिए'

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सांसद आदर्श ग्राम योजना की शुरूआत करते हुए कहा कि इससे अच्छी राजनीति के द्वार खुलेंगे। उन्होंने सभी सांसदों से विकास के लिए एक-एक गांव का चयन करने का आग्रह किया और कहा कि ये विकास आपूर्ति पर आधारित मॉडल के बजाय मांग और जरूरत तथा जनता की भागीदारी पर आधारित होना चाहिए।

प्रधानमंत्री ने कहा कि अक्सर गांवों में विकास आपूर्ति की उपलब्धता के अनुरूप किया जाता है। उन्होंने कहा कि सांसद आदर्श योजना की तीन अनूठी विशेषताएं होनी चाहिए। यह मांग पर आधारित हो, समाज द्वारा प्रेरित हो और इसमें जनता की भागीदारी होनी चाहिए। श्री मोदी ने कहा कि लोकतंत्र और राजनीति को अलग नहीं किया जा सकता लेकिन बुरी राजनीति से अक्सर नुकसान होता है। यह योजना अच्छी राजनीति की ओर बढ़ने की प्रेरणा देगी और सांसद मददगार और उत्प्रेरक के रूप में भूमिका निभाएंगे।

योजना के दिशा निर्देश जारी करने के बाद समारोह को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि स्वतंत्रता के बाद से अब तक सभी सरकारों ने ग्रामीण विकास के लिए काम किया है। इन प्रयासों में समय के साथ संशोधन किया जाना चाहिए ताकि विश्व में आ रहे परिवर्तनों के अनुरूप आगे बढ़ा जा सके। उन्होंने कहा हालांकि देश भर में सरकारी स्कीमों पर काम किया जा रहा है लेकिन प्रत्येक राज्य में कुछ ही ऐसे गांव हैं जिनपर गर्व किया जा सकता है। ऐसा लगता है कि इन गांवों में नेतृत्व और जनता ने सरकारी स्कीमों के अलावा कुछ अतिरिक्त प्रयास किये हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि सांसद आदर्श ग्राम योजना के पीछे भी कुछ अतिरिक्त प्रयास किये जाने की भावना है।

प्रधानमंत्री ने लोकनायक जयप्रकाश नारायण की जयन्ती पर उनसे प्रेरणा लेते हुए कहा कि आदर्श ग्राम बनाने के लिए विकास में जनता की भागीदारी जरूरी है। उन्होंने नानाजी देशमुख को याद करते हुए कहा कि उन्होंने गांव की आत्मनिर्भरता की आवधारणा के लिए काम किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सांसद आदर्श ग्राम योजना सांसदों के नेतृत्व में काम करेगी। श्री मोदी ने कहा कि 2016 तक प्रत्येक सांसद एक-एक गांव को विकसित बनाएंगे और बाद में 2019 तक दो और गांवों का विकास होगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि अगर राज्य सरकारें भी विधायकों को इस योजना के लिए काम करने को प्रोत्साहित करें तो इसी समय सीमा में 5 से 6 और गांवों को विकसित बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि अगर प्रत्येक ब्लॉक में एक गांव विकसित किया जाता है तो इसका ब्लॉक के अन्य गांवों पर अनुकूल असर पड़ेगा।

प्रधानमंत्री ने कहा कि विभिन्न सरकारी स्कीमें अक्सर अलग-थलग संचालित की जाती है, मगर सांसद आदर्श ग्राम योजना सांसदों को इन स्कीमों की बाधाओं को उजागर करने का अवसर देगी, जिससे परिणामोन्मुख दृष्टिकोण विकसित किया जा सकेगा।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सांसद अपने क्षेत्र में कोई भी गांव चुनने में स्वतंत्र होंगे मगर वे अपना गांव या अपने ससुराल के गांव का चयन नहीं कर सकेंगे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सांसद आदर्श ग्राम योजना विकास के प्रति लचीला दृष्टिकोण प्रदान करेगी और उन्होंने आशा व्यक्त की कि आदर्श ग्राम, ग्रामीण विकास के बारे में सीखने के इच्छुक लोगों के लिए तीर्थ स्थान बन जाएंगे।

केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री श्री नितिन गडकरी और ग्रामीण विकास राज्य मंत्री श्री उपेन्द्र कुशवाहा ने भी इस अवसर पर विचार व्यक्त किये। ■